Majusi Ka Qabule Islam (Hindi)

मजूसी का क़बूले इस्लाम

- म-दनी बहारों की अहम्मिय्यत
- म-दनी बहारों की वेबसाइट का मुख़्तसर तआ़रुफ़
- म-दनी बहारें बयान करने की एह़तियातें
- म-दनी बहारें बयान करने की निय्यतें

(دعوت اسلامی)
शो'बए अमीरे अह्ले सुन्नत

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले जै़ल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (المُستطرَف ج١ص٤٠دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

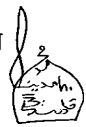

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)।

(تاريخ دمشق لابن عساكر ج٥١ص١٣٨دارالفكر بيروت)

किताब के ख़रीदार मु-तवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक-त-बतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

www.dawateislami.net

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला (**मजूसी का क़बूले इस्लाम**)

मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक-त-बतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त़ में तरतीब देते हुए दर्जे ज़ैल मुआ़-मलात को पेशे नज़र रखने की कोशिश की गई है **:**

(1) क़रीबुस्सौत (या'नी मिलती जुलती आवाज़ वाले) हुरूफ़ के आपसी इम्तियाज़ (या'नी फ़र्क़) को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के चन्द मख़्सूस हुरूफ़ के नीचे डॉट (.) लगाने का खुसूसी एहतिमाम किया गया है। मा'लूमात के लिये "**हुरूफ़ की पहचान**" नामी चार्ट मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये।

(2) जहां जहां तलफ़्फ़ुज़ के बिगड़ने का अन्देशा था वहां तलफ़्फ़ुज़ की दुरुस्त अदाएगी के लिये जुम्लों में डेश (-) और साकिन ह़र्फ़ के नीचे खोड़ा (्) लगाने का एहतिमाम किया गया है।

(3) उर्दू में लफ़्ज़ के बीच में जहां ع साकिन आता है उस की जगह हिन्दी में सिंगल इन्वर्टेड कोमा (') इस्ति'माल किया गया है। म-सलन دَعوت، اِستعمال (दा'वत, इस्ति'माल) वग़ैरा।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़-लत़ी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

हुरूफ़ की पहचान

फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ	त = ت
ह़ = ح	छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج
ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ
ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ
ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س	ज़ = ژ
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط
घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل
ई = اِی / ئ	इ = اِ	ऐ = اے	ए = ے	य = ی

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,

तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409 ´E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी मुनाजातों, ना'तों और मन्क़बतों के मुअ़त्त़र व मुअ़म्बर म-दनी गुलदस्ते **''वसाइले बख़्शिश''** में दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत नक़्ल फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है : जिस ने दिन और रात में मेरी त़रफ़ शौक़ व मह़ब्बत की वज्ह से तीन तीन मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ह़क़ है कि वोह उस के उस दिन और रात के गुनाह बख़्श दे।

(الترغیب والترھیب، ۲/۳۲۸، حدیث: ۲۳)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

म-दनी बहारों की अहम्मिय्यत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तारीख़ और सीरते बुज़ुर्गाने दीन की कुतुब के मुत़ा-लए से एक बात वाज़ेह़ होती है कि कई ऐसी बुज़ुर्ग हस्तियां जिन का ज़िक्र करना सआ़दत मन्दी समझा जाता है, उन के मक़ामे विलायत के आ'ला द-रजों पर फ़ाइज़ होने से पहले के वाक़िआ़त को दर्स व नसीह़त के लिये मु-तअ़द्दद

www.dawateislami.net

कुतुब में बयान किया गया है ताकि लोग इन से दर्स हासिल करें और अपनी क़ब्रो आख़िरत की तय्यारी में मश्ग़ूल हो जाएं, इन्ही **औलियाउल्लाह** में ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم, ह़ज़रते सय्यिदुना बिश्रे ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى, ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه और ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار जैसी बुलन्द पाया हस्तियां भी शामिल हैं। शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **ह़ज़रते मालिक बिन दीनार** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار की ज़िन्दगी में बरपा होने वाले म-दनी इन्क़िलाब को अपने रिसाले **"नेक बनने का नुस्ख़ा"** में भी नक़्ल फ़रमाया है।

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار से किसी ने उन की तौबा का सबब पूछा तो फ़रमाया : मैं महकमए पोलीस में सिपाही था, गुनाहों का आ़दी और पक्का शराबी था। मेरी एक ही बच्ची थी उस से मुझे बेह़द प्यार था। वोह दो[2] साल की उ़म्र में फ़ौत हो गई, मैं ग़म से निढाल हो गया। इसी साल जब शबे बराअत आई मैं ने नमाज़े इ़शा तक न पढ़ी, ख़ूब शराब पी और नशे ही में मुझे नींद ने घेर लिया। मैं ख़्वाब की दुन्या में पहुंच गया, क्या देखता हूं कि मह़शर बरपा है, मुर्दे अपनी अपनी क़ब्रों से उठ कर जम्अ़ हो रहे हैं, इतने में मुझे अपने पीछे सर-सराहट मह़सूस हुई, मुड़ कर जो देखा तो एक **क़दआवर सांप** मुंह खोले मुझ पर ह़म्ला आवर होने वाला था! मैं घबरा कर भाग खड़ा हुवा, सांप भी मेरे पीछे पीछे दौड़ने

www.dawateislami.net

लगा, इतने में एक नूरानी चेहरे वाले **कमज़ोर बुज़ुर्ग** पर मेरी नज़र पड़ी, मैं ने उन से फ़रियाद की, तो उन्हों ने फ़रमाया : ''मैं बेहद कमज़ोर हूं आप की मदद नहीं कर सकता।'' मैं फिर तेज़ी के साथ भागने लगा, सांप भी बराबर तआ़क़ुब में था, दौड़ते दौड़ते मैं एक टीले पर चढ़ गया, टीले के उस त़रफ़ **ख़ौफ़नाक आग** शो'लाज़न थी और काफ़ी लोग उस में जल रहे थे, मैं उस में गिरने ही वाला था कि आवाज़ आई : ''पीछे हट जा तू इस आग के लिये नहीं है।'' मैं ने अपने आप को संभाला और पलट कर दौड़ने लगा और **सांप** भी पीछे पीछे था, वोही **कमज़ोर बुज़ुर्ग** मुझे फिर मिल गए और रो कर फ़रमाने लगे : ''अफ़्सोस ! मैं बहुत ही कमज़ोर हूं आप की मदद नहीं कर सकता, वोह देखिये सामने जो **गोल पहाड़** है वहां मुसल्मानों की ''अमानतें'' हैं, वहां तशरीफ़ ले जाइये, अगर आप की भी वहां कोई अमानत हुई तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ रिहाई की कोई सूरत निकल आएगी।'' मैं गोल पहाड़ पर पहुंचा, वहां दरीचे बने हुए थे, उन दरीचों पर रेशमी पर्दे लटक रहे थे, दरवाज़े **सोने** के थे और उन में **मोती** जड़े हुए थे। फ़िरिश्ते ए'लान फ़रमाने लगे : ''पर्दे हटा दो, दरवाज़े खोल दो, शायद इस परेशान ह़ाल की कोई ''अमानत'' यहां मौजूद हो, जो इसे सांप से बचा ले।'' दरीचे खुल गए और बहुत सारे बच्चे चांद से चेहरे चमकाते झांकने लगे, उन ही में मेरी फ़ौत शुदा दो सालह **बच्ची** भी थी, मुझे देख कर वोह रो रो कर चिल्लाने लगी : ''ख़ुदा

www.dawateislami.net

की क़सम ! येह तो मेरे अब्बूजान हैं,'' फिर ज़ोरदार छलांग लगा कर वोह मेरे पास आ पहुंची और अपने बाएं हाथ से मेरा दायां हाथ थाम लिया। येह देख कर वोह **क़दआवर सांप** पलट कर भाग खड़ा हुवा, अब मेरी जान में जान आई, बच्ची मेरी गोद में बैठ गई और सीधे हाथ से मेरी दाढ़ी सहलाते हुए उस ने पारह 27 **सू-रतुल ह़दीद** की 16वीं आयत का येह जुज़ तिलावत किया :

اَلَمْ یَاْنِ لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ ۙ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : क्या ईमान वालों को अभी वोह वक़्त न आया कि उन के दिल झुक जाएं **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की याद और उस ह़क़ (या'नी कुरआने पाक) के लिये जो उतरा।

अपनी बच्ची से येह आयते करीमा सुन कर मैं रो पड़ा। मैं ने पूछा : बेटी वोह **क़दआवर सांप** क्या बला थी ? कहा : वोह आप के बुरे आ'माल थे जिन को आप बढ़ाते ही चले जा रहे हैं। **क़दआवर सांप** नुमा बद आ'मालियां आप को जहन्नम में पहुंचाने के दरपै हैं। पूछा : वोह **कमज़ोर बुज़ुर्ग** कौन थे ? कहा : वोह आप की नेकियां थीं चूंकि आप नेक अ़मल बहुत कम करते हैं लिहाज़ा वोह बेह़द कमज़ोर हैं और आप की बुराइयों का मुक़ाबला करने से क़ासिर हैं। मैं ने पूछा : तुम यहां पहाड़ पर क्या करती हो ? कहा : ''मुसल्मानों के फ़ौत शुदा बच्चे यहीं मुक़ीम हो कर क़ियामत का इन्तिज़ार करते हैं, हमें अपने वालिदैन का इन्तिज़ार है कि वोह आएं तो हम उन की शफ़ाअ़त करें।'' फिर

www.dawateislami.net

मेरी आंख खुल गई, मैं इस ख़्वाब से सहम गया था, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने अपने तमाम गुनाहों से रो रो कर तौबा की ।

(روضُ الرّیاحین، ص۱۷۳)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हर इन्सान को फ़ित्रते सलीमा पर पैदा फ़रमाया है और उसे क़ल्बे सलीम की ने'मत से नवाज़ा है मगर मां बाप से मिलने वाली तरबिय्यत, असातिज़ा और मुआ़-शरे में रहने वाले लोगों की सोह़बत उसे निखार देती है या बिगाड़ देती है । फ़ी ज़माना अच्छी सोह़बतें कमयाब और बुरी सोह़बतें आ़म होती जा रही हैं । इसी वज्ह से लोग मुख़्तलिफ़ गुनाहों में गिरिफ़्तार और क़ुरआनो सुन्नत की ता'लीमात से ग़फ़्लत का शिकार नज़र आते हैं, मगर बारहा देखा गया है कि जब कोई बेदार दिल शख़्स उन्हें ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार करता है और उन्हें ज़िन्दगी के मक़्सद से आशना करता है तो वोह अपने गुनाहों से ताइब हो जाते और तोशए आख़िरत जम्अ़ करने में मश्ग़ूल हो जाते हैं । आज के इस पुर फ़ितन दौर में जब कि लोग दुन्या की मह़ब्बत में गिरिफ़्तार हैं, यादे इलाही से ग़ाफ़िल हैं, फ़ेशन परस्ती की त़रफ़ माइल हैं, दुन्या ही के ह़ुसूल को मक़्सदे ह़यात समझ बैठे हैं और इसी की त़लब में अपनी ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं, ऐसे नाज़ुक ह़ालात में اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने बुज़ुर्गाने दीन के नक़्शे क़दम पर चलते हुए

www.dawateislami.net

नेकी की दा'वत आ़म करने का बीड़ा उठाया और तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी की सूरत में म-दनी तह़रीक का आग़ाज़ फ़रमाया, जिस के तह़्त काम करने वाले मुख़्तलिफ़ शो'बाजात आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के फ़रमूदात की रोशनी में दिन रात काम कर रहे हैं और उम्मत की इस्लाह़ और इन्सानिय्यत की फ़लाह़ के लिये दुन्या भर में अपनी ख़िदमात सर अन्जाम दे रहे हैं।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के असर अंगेज़ बयानात और दिल में म-दनी इन्क़िलाब बरपा करने वाली तह़रीरात ने मा'सियत व गुमराही के अंधेरों में सुन्नतों का उजाला कर दिया है। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की इस्लाही सरगर्मियों के सबब लाखों लाख मुसल्मानों की ज़िन्दगियों में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो गया, उन की बिगड़ी ह़ालतें संवर गईं, सौमो सलात की पाबन्दी और गुनाहों से कनारा कशी की तौफ़ीक़ मिल गई, क़त्लो ग़ारत गरी, डाका ज़नी और चोरी चकारी से भी तौबा नसीब हो गई।

दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल की ब-र-कत से जिन बे अ़मल मुसल्मानों को अ़मल का जज़्बा मुयस्सर आ गया या कुफ़्र की वादियों में भटक्ने वालों को गुलशने इस्लाम मिल गया या किसी शख़्स को ख़ातिमा बिलख़ैर नसीब हो गया तो ऐसे ख़ुश नसीब इस्लामी भाइयों की म-दनी बहारें तह़रीर की सूरत में दा'वते इस्लामी के आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना

www.dawateislami.net

भेजी जाती हैं जहां मजलिसे "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" के तह़्त क़ाइम शो'बए "अमीरे अहले सुन्नत" में उन म-दनी बहारों पर काम किया जाता है और ज़रूरी तरमीम के बा'द मुख़्तलिफ़ मौज़ूआ़त की सूरत में इन्हें शाएअ़ किया जाता है, ताकि लोगों के लिये नसीह़त का सामान हो, वोह भी गुनाहों से बचें और क़ब्रो आख़िरत की तय्यारी करें। अब तक बे शुमार इस्लामी भाइयों की म-दनी बहारें छप कर मुश्तहर हो चुकी हैं और बहुत सी मुरत्तब होने के मराह़िल में हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इन म-दनी बहारों की बदौलत नौ जवानों की ज़िन्दगियों में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो रहा है। मु-तअ़द्दद म-दनी बहारें ऐसी मौसूल हुईं जिन में म-दनी बहार पढ़ने या सुनने या ब ज़रीअ़ए म-दनी चेनल इस्लामी भाइयों को अपनी म-दनी बहारें बयान करते हुए देखने की ब-र-कत से दिल में म-दनी इन्क़िलाब बरपा होने, गुनाहों भरी ज़िन्दगी से ताइब होने और दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे म-दनी माह़ोल से वाबस्ता होने के बारे में लिखा हुवा था। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ यूं म-दनी बहारें भी म-दनी बहार ला रही हैं, म-दनी बहारों की अहम्मिय्यत व इफ़ादिय्यत पर ऐसी ही म-दनी बहारें मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये।

﴾1﴿ मजूसी का क़बूले इस्लाम

हिन्द के मश्हूर शह्र बम्बई के एक नौ मुस्लिम इस्लामी भाई जहांगीर अ़त्तारी जो पहले आतश परस्त (या'नी आग की

www.dawateislami.net

पूजा करने वाले) थे उन का बयान अल्फ़ाज़ की कमी बेशी के साथ कुछ इस त़रह़ है कि दामने इस्लाम में आने से क़ब्ल मैं आतश परस्त था, मेरा बात़िन कुफ़्रो शिर्क के अंधेरों में डूबा हुवा था, मा'बूदे बरह़क़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ग़ाफ़िल और ग़ैर मुस्लिमों और आतश परस्तों की बेहूदा रुसूमात का आ़मिल था। चूंकि ईमान की अनमोल ने'मत से ख़ाली था तभी नफ़्सानी ख़्वाहिशात की तक्मील मेरी ज़िन्दगी का मक़्सदे ऐ़न था, दुन्या के बे शुमार नौ जवानों की त़रह़ मुझ पर भी एक नामवर फ़िल्मी एक्टर बनने का भूत सुवार था और इसी मक़्सद के ह़ुसूल के लिये एक फ़िल्म इन्डस्ट्री में बत़ौरे एक्टर काम करता था, औ़रतों के साथ मिलने जुलने, बातचीत करने, उन के साथ अपने अवक़ात बसर करने और बेहूदा मुआ़-मलात में ह़िस्सा लेने में कुछ आ़र मह़सूस न करता था, दुन्या कमाने और लज़्ज़ाते दुन्या के ज़रीए़ नफ़्स को तस्कीन पहुंचाने की तगो दौ में मसरूफ़ रहता था। बिल आख़िर मैं फ़िल्मी दुन्या में मश्हूरो मा'रूफ़ एक्टर के त़ौर पर मु-तआ़रिफ़ होने लगा, दो फ़िल्में रीलीज़ होने वाली थी, कई फ़िल्मों के लिये साइन किये हुए थे मगर ह़क़ीक़त में येह शैत़ान का बुना हुवा एक मज़बूत़ जाल था जिस में बुरी त़रह़ गिरिफ़्तार था। मुरझाए पौदे को पानी के ज़रीए़ हरा करना या बुझते दिये को दोबारा शो'लाज़न करना अगर्चे क़ाबिले ता'रीफ़ है मगर नया गुलशन आबाद करना और अंधेरे में उजाला करना इस से ज़ियादा लाइक़े तह़्सीन है, इसी ह़क़ीक़त के मिस्दाक़ मेरे कुफ़्र

www.dawateislami.net

की तारीकी में डूबे दिल में नूरे इस्लाम और श-जरे ईमान कुछ इस त़रह़ नुमूदार हुवा कि मेरी वालिदा म-दनी चेनल देखा करती थीं, तो मैं चेनल तब्दील कर दिया करता था, इसी त़रह़ वक़्त गुज़रता रहा, मेरी क़िस्मत का सितारा चमका कि एक दिन ख़याल आया कि आख़िर येह लोग क्या कहते हैं ? इन के न-ज़रिय्यात क्या हैं ? यूं एक दिन म-दनी चेनल देखने का मौक़अ़ मिला, येह चेनल दीगर तमाम चेनलों से बिल्कुल मुख़्तलिफ़ था लिहाज़ा इस पर नश्र होने वाला सिल्सिला देखने लगा, म-दनी चेनल पर सिल्सिला करने वाले मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी निगाहें झुकाए, सर पर सब्ज़ इमामे शरीफ़ का ताज सजाए हुए थे और अपने दिल लुभाने वाले अन्दाज़ में इस्लाह़े आ'माल का दर्स दे रहे थे। मुसल्मान इस से क़ब्ल बहुत देखे थे मगर आज एक मुन्फ़रिद मुसल्मान अपनी आंखों से देख रहा था। यूं मैं उन की बातें सुनने में मश्ग़ूल हो गया और फिर इस के बा'द म-दनी चेनल देखना मेरा मा'मूल बन गया। म-दनी चेनल पर आने वाले और इस्लाम की ह़क़ीक़ी तरजुमानी करने वाले आ़शिक़ाने रसूल ख़ुसूसन शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का नूरानी जल्वा और आप के मह़ब्बत भरे अल्फ़ाज़ मेरी मज़्हबे इस्लाम से मह़ब्बत का सबब बन गए, मैं जब म-दनी चेनल देखता मुझे एक क़ल्बी सुकून नसीब होता, इस त़रह़ रफ़्ता रफ़्ता मेरे दिलो दिमाग़ पर चढ़ी कुफ़्र की सियाही दूर होने लगी और ईमान की रोशनी मेरे बात़िन में

www.dawateislami.net

फ़रोज़ां होती गई, मज़्हबे इस्लाम की ह़क़्क़ानियत मुझ पर आशकार हो गई और हिदायत व गुमराही की तमीज़ मुझ पर इ़यां हो गई चुनान्चे मैं ने मज़्हबे इस्लाम क़बूल करने का फ़ैसला कर लिया और इस मक़्सद की तक्मील के लिये मैं ने दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ एक रिसाले का सहारा लिया, उस के पीछे लिखे नम्बर पर फ़ोन किया और दा'वते इस्लामी के एक ज़िम्मादार इस्लामी भाई से राबित़ा कर के उन से अपनी दिली ख़्वाहिश का इज़्हार किया, उन इस्लामी भाई ने हाथों हाथ **कलिमए त़य्यिबा** (لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ) पढ़ा कर मुझे दाइरए इस्लाम में दाख़िल कर लिया, मेरे अहले ख़ाना भी दामने इस्लाम से वाबस्ता हो गए । इस्लाम लाने के बा'द दा'वते इस्लामी के ज़िम्मादार इस्लामी भाइयों ने मुझ से राबित़ा किया और मुझे अपनी तरकीब में ले लिया ।

एक ग़ैर मुस्लिम घराने में परवरिश पाने वाले का इस्लाम क़बूल करना कोई आसान काम नहीं, न उसे छुपाए रखना मुम्किन है लिहाज़ा जब ख़ानदान वालों को मेरे इस्लाम लाने का पता चला तो एक त़ूफ़ान खड़ा हो गया और मुझ पर सख़्तियों का सिल्सिला शुरूअ़ हो गया मगर चूंकि اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मज़्हबे इस्लाम की सच्चाई मुझ पर वाज़ेह़ हो चुकी थी और इस की पाकीज़ा ता'लीमात दिल में घर कर चुकी थीं लिहाज़ा मेरे पाए इस्तिक़्लाल में लग़्ज़िश न आई और मैं दीने इस्लाम पर साबित क़दम रहा ।

www.dawateislami.net

मेरा ज़रीअए मआ़श फ़िल्म इन्डस्ट्री का काम था और इसी से मेरा गुज़र बसर होता था, इस्लाम लाने के बा'द येह गुनाहों भरा काम छोड़ने का ज़ेह्न बनता मगर नफ़्सो शैत़ान आड़े आते और फ़क़्रो फ़ाक़ा व बे रोज़गारी के ख़ौफ़ से डराते, यूं मैं नाकाम रहता। वक़्त इसी त़रह़ गुज़रता रहा बिल आख़िर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मुझ पर करम हो गया और इस आफ़त से भी नजात का सामान हो गया, हुवा कुछ इस त़रह़ कि एक दिन जब मैं ने म-दनी चेनल लगाया तो उस पर साबिक़ा गुलूकार और मौजूदा ना'त ख़्वां जुनैद शैख़ अ़त्त़ारी की ज़िन्दगी में आने वाले म-दनी इन्क़िलाब का तज़्किरा चल रहा था (जिन की म-दनी बहार शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपने रिसाले **''क़ब्र की पहली रात''** में ज़िक्र फ़रमाई है) जब मैं ने उन्हें सुन्नतों से आरास्ता देखा तो मेरी ढारस बंधी, उन के जोशे ईमानी को देख कर मेरा ह़ौसला बढ़ा, मैं सोचने लगा कि जब येह अपनी क़ब्रो आख़िरत की बेहतरी की ख़ात़िर गुलूकारी छोड़ सकते हैं तो मैं फ़िल्मी अदाकारी क्यूं नहीं छोड़ सकता, इन्हों ने इमामा शरीफ़ सजा लिया, दाढ़ी शरीफ़ रख ली और साबिक़ा मा'मूलाते ज़िन्दगी छोड़ कर सुन्नतों भरी ज़िन्दगी अपना ली है, मेरा माज़ी का अन्दाज़े ज़िन्दगी इन से ज़ियादा मुख़्तलिफ़ नहीं है तो जब येह गुनाहों भरी ज़िन्दगी छोड़ कर नेकियों की शाहराह पर गामज़न हो सकते हैं तो मैं राहे सुन्नत का मुसाफ़िर क्यूं नहीं बन सकता, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत ने इन्हें बे सहारा न छोड़ा तो वोह मेरा भी तो रब عَزَّوَجَلَّ है, मुझे उस की ज़ात पर भरोसा करना चाहिये और उस की रह़मत से

www.dawateislami.net

उम्मीद रखनी चाहिये चुनान्चे उन की म-दनी बहार देखने के बा'द मैं ने पक्का इरादा कर लिया कि मैं फ़िल्म इन्डस्ट्री को छोड़ दूंगा और इस्लामी अह़काम पर दिलो जान से अ़मल करूंगा। इस के बा'द मैं ने येह नेक क़दम उठाया और अपनी निय्यत को अ़-मली जामा पहनाया। कहते हैं "निय्यत साफ़ मन्ज़िल आसान" बस इसी क़ौल के मिस्दाक़ मेरी मुश्किलात आसान होती गईं और तमाम आज़्माइशें ज़ाइल हो गईं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से मैं ने मुकम्मल तौ़र पर गुनाहों भरे कामों से दूरी इख़्तियार कर ली और दा'वते इस्लामी के बा अ़मल आ़शिक़ाने रसूल की पाकीज़ा सोह़बत में रहने लगा, अच्छा रोज़गार भी मिल गया। फिर जल्द ही मुझ पर म-दनी रंग चढ़ने लगा, सर पर सब्ज़ इ़मामा शरीफ़ सजा लिया, दाढ़ी शरीफ़ बढ़ाना शुरूअ़ कर दी, सफ़ेद लिबास पहनने के साथ साथ म-दनी चादर भी इ़मामे शरीफ़ के ऊपर ओढ़ने लगा, जूं जूं म-दनी माह़ोल में वक़्त गुज़रता गया मेरे इ़ल्म व अ़मल में इज़ाफ़ा होता गया, दिल नेकी की जानिब माइल होता गया। सुन्नतें सीखने, दूसरों को सिखाने और दीने इस्लाम का पैग़ाम आ़म करने के जज़्बे के तह़्त म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना अपना मा'मूल बना लिया। **औलियाउल्लाह** का फ़ैज़ान पाने और शैत़ान के हथकन्डों से ख़ुद को बचाने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का मुरीद भी हो गया। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़त़ा कर्दा म-दनी मक़्सद **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है"** को अपना मक़्सदे ह़यात बना लिया।

www.dawateislami.net

मेरी उन तमाम लोगों से म-दनी इल्तिजा है जो येह कहते हैं कि हम बदल नहीं सकते, येह ख़याल अपने दिलो दिमाग़ से निकाल दें, आप बस हिम्मत कीजिये और दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में पाबन्दी के साथ शिर्कत कीजिये, घर में म-दनी चेनल देखने की तरकीब बनाइये, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ आप ख़ुद अपने अन्दर तब्दीली महसूस करेंगे और नेकियां करने और बुराइयों से बचने वाले बन जाएंगे।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जहांगीर अ़त्तारी के इस्लाम क़बूल करने में जहां म-दनी चेनल का शानदार किरदार है वहीं इन की ज़िन्दगी में अ़-मली त़ौर पर जो म-दनी इन्क़िलाब बरपा हुवा उस में जुनैद शैख़ अ़त्तारी की म-दनी बहार का बड़ा अ़मल दख़्ल है कि उन की म-दनी बहार की ब-र-कत से इन नौ मुस्लिम इस्लामी भाई का फ़िल्मी एक्टर बनने का शौक़ ख़त्म हुवा और सुन्नत के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने और जहां भर में नेकी की दा'वत आ़म करने का ज़ौक़ इन्हें नसीब हुवा, यूं कुफ़्र के ख़ातिमे के साथ बे अ़-मली का दाग़ भी इन के दामन से दूर हुवा, इस बात से म-दनी बहारों के छपने, इन के शाएअ़ होने और ब ज़रीअ़ए म-दनी चेनल टेलीकास्ट होने की अहम्मिय्यत व अफ़ादियत का बख़ूबी अन्दाज़ा लगाया जा सकता है। येह ह़क़ीक़त है कि हर आदमी कोई भी नया काम करने से क़ब्ल हिच-किचाता और घबराता है, मगर जब औरों को वोही काम करते देखता है तो उस के अन्दर भी हिम्मत पैदा होती है, लिहाज़ा म-दनी माह़ोल से

www.dawateislami.net

वाबस्ता इस्लामी भाइयों को चाहिये कि वोह अपनी म-दनी बहारें तह़रीरी सूरत में मत़लूबा एड्रेस पर इरसाल फ़रमाएं ताकि इन म-दनी बहारों के ज़रीए अ़मल से दूर और सुन्नतों से मह़रूम लोगों के लिये तरग़ीब का सामान हो और बा अ़मल आ़शिक़ाने रसूल में मज़ीद नेकियों का जज़्बा बेदार हो, वाक़ेई किस क़दर ख़ुश नसीब हैं वोह इस्लामी भाई जिन की म-दनी बहार के सबब दूसरे मुसल्मान भाइयों की इस्लाह़ होती है। आप भी हिम्मत कीजिये और शैत़ान के वार को नाकाम बनाते हुए अपनी ज़िन्दगी में रूनुमा होने वाली म-दनी बहार लिख कर भेज दीजिये ताकि आप की बहार किसी रिसाले की ज़ीनत बने।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह याद रहे कि म-दनी इन्क़िलाब या'नी गुनाहों भरी ज़िन्दगी छोड़ कर सुन्नतों भरी ज़िन्दगी अपनाना ही सिर्फ़ म-दनी बहार नहीं है बल्कि इस में ईमान अफ़्रोज़ वफ़ात, ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या की म-दनी बहार, म-दनी क़ाफ़िले की ब-र-कत से ठीक होने वाली बीमारी या ह़ल होने वाली परेशानी के वाक़िआ़त या म-दनी चेनल या हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ से ह़ासिल होने वाले फ़ुयूज़ो ब-रकात अल ग़रज़ हर वोह म-दनी बहार जिस के ज़रीए दा'वते इस्लामी के बारगाहे ख़ुदा वन्दी में मक़्बूल होने का पता चले और म-दनी माह़ोल की अहम्मिय्यत व अफ़ादियत का अन्दाज़ा हो सके, म-दनी बहार के ज़ुमरे में आता है। म-दनी बहार फ़ॉर्म के शुरूअ़ में लिखी हिदायत भी इस ह़वाले से मुफ़ीद है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾2﴿ म-दनी बुरक़अ़ पहन लिया

एक इस्लामी बहन के बयान का मफ़्हूम कुछ इस त़रह़ है : इस्लामी बहनों के पर्दा करने की शरीअ़ते इस्लामिया में बड़ी अहम्मिय्यत है और इस पर अ़मल की सख़्त ताकीद है मगर अफ़्सोस ! मैं इस हुक्मे इस्लाम से ग़ाफ़िल थी और बे पर्दगी की आफ़त में मुब्तला थी। इस के इ़लावा फ़िल्में डिरामे देखने की भी आ़दी थी। मेरी बे अ़-मली के म-दनी इ़लाज की तरकीब कुछ इस त़रह़ बनी कि एक रोज़ म-दनी चेनल लगाया तो उस पर एक ग़ैर मुस्लिम एक्टर के इस्लाम क़बूल करने की म-दनी बहार का तज़्किरा चल रहा था, इस्लाम लाने वाले वोह ख़ुश नसीब इस्लामी भाई अपनी बहार ख़ुद ही बयान कर रहे थे और गुलशने इस्लाम की सदाक़त का परचार कर रहे थे। क़बूले इस्लाम की इस म-दनी बहार ने मुझ पर अपना ऐसा असर किया कि मेरे अन्दर भी म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो गया, दिल में इत़ाअ़ते इस्लाम का जज़्बा पैदा हो गया, शर-ई पर्दा करने और गुनाहों से बचने का ज़ेह्न बन गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ म-दनी चेनल पर नश्र होने वाली इस म-दनी बहार की ब-र-कत से मुझे शर-ई पर्दा करना नसीब हो गया, फ़िल्में डिरामे देखने की मेरी आ़दत छूट गई और इस्लाम के अह़काम के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी बसर करने की तौफ़ीक़ मिलने लगी। अब हमारे घर में सिर्फ़ और सिर्फ़ म-दनी चेनल ही चलता है और हम इस पर नश्र होने वाले शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के म-दनी मुज़ा-करे और दीनी मा'लूमात

www.dawateislami.net

से मालामाल सुन्नतों भरे सिल्सिले देखते हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ जब से म-दनी चेनल देखना शुरूअ़ किया है दिन ब दिन अ़मल में इज़ाफ़ा होता जा रहा है और इल्मे दीन का ढेरों ख़ज़ाना हाथ आ रहा है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि किस त़रह़ म-दनी बहार से म-दनी बहार आ रही है और इ़स्यां की तारीकियां छट रही हैं। बिला शुबा इस्लामी बहनों का पर्दा करना निहायत ज़रूरी है और येह हुक्मे इलाही है, जैसा कि पारह 22 **सू-रतुल अह़ज़ाब** की आयत नम्बर 33 में पर्दे का हुक्म देते हुए परवर दगार عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَقَرْنَ فِیْ بُیُوْتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِیَّةِ الْاُوْلٰى **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और अपने घरों में ठहरी रहो और बे पर्दा न रहो जैसे अगली जाहिलिय्यत की बे पर्दगी।

ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی इस के तह़्त फ़रमाते हैं : **''अगली जाहिलिय्यत से मुराद क़ब्ले इस्लाम का ज़माना है, उस ज़माने में औ़रतें इतराती निकलती थीं, अपनी ज़ीनत व महासिन (या'नी बनाव सिंघार और जिस्म की ख़ूबियां म-सलन सीने के उभार वग़ैरा) का इज़्हार करती थीं कि ग़ैर मर्द देखें। लिबास ऐसे पहनती थीं जिन से जिस्म के आ'ज़ा अच्छी त़रह़ न ढकें।''** (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 673)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुसल्मानों के क़ुलूब में हुब्बे ख़ुदा और इ़श्क़े मुस्त़फ़ा की शम्अ़ फ़रोज़ां करने के अ़ज़ीम मक़्सद के तह़्त तब्लीगे़ क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी ने जहां मुख़्तलिफ़ ज़राइए़ इब्लाग़ को अपनाया वहीं इलेक्ट्रोनिक मीडिया के मैदान में भी मूसीक़ी और ख़ुराफ़ात से पाको साफ़ **''म-दनी चेनल''** की ट्रान्समीशन का आग़ाज़ कर के सुन्नतों का पैग़ाम हर एक मुसल्मान तक पहुंचाने में एक अहम किरदार अदा किया है। लोगों की इस्लाह़ की ख़ातिर म-दनी चेनल पर मुख़्तलिफ़ ईमान अफ़्रोज़ सिल्सिलों की तरकीब होती है, म-दनी चेनल पर इस्लामी भाइयों की म-दनी बहार उन्ही की ज़बानी सुनी जाती है, ताकि ह़ाज़िरीन व नाज़िरीन उन से इ़ब्रत ह़ासिल करें और उन की त़रह़ दा'वते इस्लामी के मुश्कबार म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर नमाज़ों के पाबन्द और सुन्नतों के आईना दार बन कर अपनी क़ब्रो आख़िरत को संवारने वाले बन जाएं, म-दनी बहारों के ज़रीए़ नेकी की दा'वत आ़म करने के अ़ज़ीम जज़्बे के तह़्त म-दनी बहारों की एक Website तय्यार की गई है।

वेबसाइट का मुख़्तसर तआ़रुफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! म-दनी बहारों के रंगारंग फूलों से मुश्कबार होने के लिये म-दनी बहारों की Website का विज़िट करना भी इन्तिहाई मुफ़ीद साबित होगा, इस Website

www.dawateislami.net

का एड्रेस madanibaharain.dawateislami.net है। इस में म-दनी बहारों के ह़वाले से आप को ढेरों ढेर मा'लूमात का ख़ज़ाना हाथ आएगा। इस Website का मुख़्तसर तआ़रुफ़ कुछ यूं है कि सब से पहले जूं ही आप इस Website में दाख़िल होंगे तो आप को म-दनी बहारों के ख़ूब सूरत बेनर्ज़ लगे हुए नज़र आएंगे जो मुख़्तलिफ़ मौज़ूआ़त की म-दनी बहारों के रसाइल के नाम और दीगर चीज़ों की मा'लूमात से मुज़य्यन किये गए हैं, मज़ीद इस में Media Gallery है जिस में आप न सिर्फ़ बहारें सुन सकते हैं बल्कि साहि़बे म-दनी बहार की ज़िन्दगी में रूनुमा होने वाले म-दनी निखार को अपने सर की आंखों से देख भी सकते हैं कि किस त़रह़ एक वलिय्ये कामिल की नज़रे विलायत से मॉडर्न नौ जवान सुन्नतों के आईना दार बन कर अपनी ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं, इस के इ़लावा इस में क़बूले इस्लाम की म-दनी बहारें, उ़-लमाए दा'वते इस्लामी की म-दनी बहारें, दा'वते इस्लामी कहां नहीं और अराकीने शूरा की म-दनी बहारें जो कि इस Website की जान हैं मुला-ह़ज़ा कर सकते हैं, इस के इ़लावा इस Website में एक फ़ोल्डर book के नाम से है जिस में मक-त-बतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा म-दनी बहारों के मुख़्तलिफ़ मौज़ूआ़त के मु-तअ़द्दद रसाइल मौजूद हैं, जिन्हें न सिर्फ़ आप पढ़ सकते हैं बल्कि बा आसानी डाउन लोड भी कर सकते हैं, मज़ीद इस में Introduction के नाम से एक अहम फ़ोल्डर है जिस में म-दनी बहारें लिखने की एह़तियात़ें, निय्यतें

www.dawateislami.net

और अहम्मिय्यत के म-दनी फूल अपनी ख़ुश्बूएं लुटा रहे हैं जिन की ब-र-कत से म-दनी बहारों के ह़वाले से ज़ेह्न में उभरने वाले इश्कालात का क़ल्अ़ क़म्अ़ भी कर सकते हैं, इस के इ़लावा इस Website में एक फ़ोल्डर Service के नाम से है इस में न सिर्फ़ सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या अ़त्तारिय्या में मुरीद और त़ालिब बनने के फ़ॉर्म मौजूद हैं बल्कि ईमेल और एसएमएस के ज़रीए़ क़ादिरी र-ज़वी अ़त्तारी बनने का त़रीक़ा भी मौजूद है। मज़ीद इस में म-दनी बहारों के फ़ॉर्म हैं और म-दनी बहार लिख कर ईमेल करने के option (ओपशन) के बारे में भी मा'लूमात फ़राहम की गई है।

बराए ख़ाके मदीना ! अगर दा'वते इस्लामी के फ़ैज़ान की कोई म-दनी बहार आप की ज़िन्दगी में वुक़ूअ़ पज़ीर हुई हो तो म-दनी बहारों की Website में मौजूद एह़तियात़ों और अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ ज़रूर ब ज़रूर इरसाल फ़रमाएं, क्या बईद आप की येह म-दनी बहार किसी की ज़िन्दगी में म-दनी इन्क़िलाब बरपा होने का बाइ़स बन जाए यूं जहां उसे ब-र-कतें मिलेंगी वहीं आप को भी ढेरों ढेर नेकियों का ख़ज़ाना हाथ आ सकता है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हर काम का कोई न कोई मक़्सद होता है जिस की वज्ह से वोह काम सर अन्जाम दिया जाता है, दा'वते इस्लामी की अ़ज़ीम इ़ल्मी मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" के शो'बए "**अमीरे अहले सुन्नत**" के

www.dawateislami.net

तह़्त मुख़्तलिफ़ मौज़ूआ़त पर मुश्तमिल म-दनी बहारों को ज़रूरी तरमीम के बा'द रिसाले की सूरत में शाएअ़ किया जाता है, इस के मक़ासिद क्या हैं ? इस के दीनी व दुन्यवी फ़वाइद क्या हैं ? ज़ैल में इस का बयान किया जा रहा है, ताकि म-दनी बहार पढ़ने वाले इस मक़्सद को मद्दे नज़र रखें और ज़ियादा से ज़ियादा फ़वाइद ह़ासिल करने में काम्याब हो जाएं।

सुवाल : म-दनी बहारें बयान करने का मक़्सद क्या है ?

जवाब : येह एक ना क़ाबिले फ़रामोश ह़क़ीक़त है कि किसी भी चीज़ की मुकम्मल अहम्मिय्यत उस वक़्त ज़ाहिर होती है जब उस की अस्ल और माज़ी की सूरते ह़ाल को पेशे नज़र रख कर उस की मौजूदा सूरते ह़ाल को देखा जाए, ब ज़ाहिर पकी हुई रोटी हमें मा'मूली मा'लूम होती है मगर जब हम बालियों से गन्दुम के निकलने, चक्की में पिसने और दुकान दार से ख़रीद कर आटा गूंधने के अ़मल से ले कर चूल्हे पर पकने तक के अ़मल को देखते हैं तो हमें इस की अहम्मिय्यत का अन्दाज़ा होता है, बिल्कुल इसी त़रह़ ऐसे लोग जो अपनी तौबा से क़ब्ल मुख़्तलिफ़ गुनाहों में मुब्तला थे और बा'द में सुन्नतों के आ़मिल बन कर नेकी की दा'वत आ़म करने की सआ़दत पाने वाले बन गए, तो ऐसे लोगों के अह़वाल सीरत निगारों ने बड़ी शर्ह़ो बस्त़ (या'नी तफ़्सील) के साथ बयान किये हैं ताकि उन की ज़िन्दगियों में आने वाले म-दनी इन्क़िलाब की सह़ीह़ अहम्मिय्यत उजागर हो सके और हिदायते रब्बानी की वुक़ूअ़त का अन्दाज़ा हो सके

www.dawateislami.net

और इस बात का इल्म हो सके कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत के आगे गुनाह ख़्वाह कितने ही क्यूं न हों कुछ हैसिय्यत नहीं रखते।

म-दनी बहारों के ज़रीए़ किसी के गुनाहों का परचार करना मक़्सूद नहीं होता, बल्कि उन की ज़िन्दगी में आने वाले म-दनी इन्क़िलाब के बयान के ज़रीए़ आ़म मुसल्मानों को भी सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने की दा'वत दी जाती है, ताकि लोग गुनाहों से दूर और म-दनी माह़ोल से क़रीब हो जाएं नीज़ ऐसे लोग भी अपनी इस्लाह़ की कोशिश करें कि जो समझते हैं कि शायद हम तो सुधर ही नहीं सकते।

सुवाल : म-दनी बहारों के रिसाले के आख़िर में म-दनी बहार लिखने की तरग़ीब दिलाई जाती है तो म-दनी बहार लिखने में क्या क्या एह़तियातें करनी चाहिएं ?

जवाब : म-दनी बहारें लिखना और लिखवाना एक अहम काम है लिहाज़ा इस में बहुत सी बातों का लिह़ाज़ रखना निहायत ज़रूरी है वरना बे एह़तियाती की सूरत में गुनाह में पड़ने और झूट की आफ़त में फंसने का क़वी अन्देशा है, म-दनी बहार लिखने में दर्जे ज़ैल बातों से बचना बहुत ज़रूरी है :

﴾1﴿ अपने साबिक़ा गुनाहों को बढ़ा चढ़ा कर बयान करना।

﴾2﴿ किसी फ़र्दे मुअ़य्यन, जैसे मां बाप, भाई बहन वग़ैरा की ग़ीबत करना।

﴾3﴿ अपनी किसी नाज़ैबा आ़दत को ग़ैर मुहज़्ज़ब अन्दाज़ में पेश करना।

www.dawateislami.net

﴾4﴿ किसी पर इल्ज़ाम तराशियां करना । ﴾5﴿ अपने घरेलू मसाइल को बिला वज्ह बयान करना ।

﴾6﴿ ग़ैर ज़रूरी चीज़ों में जा पड़ना वग़ैरा । येह चीज़ें न मत़लूब हैं और न ही इन से किसी चीज़ का हुसूल, फिर म-दनी बहारों से जो मक़्सूद है उस से कोसों दूर, लिहाज़ा मज़्कूरा चीज़ों से इज्तिनाब करना बहुत ज़रूरी है । इसी त़रह़ जब अपनी ज़िन्दगी में रूनुमा होने वाले म-दनी इन्क़िलाब को बयान करें तब भी कुछ बातों का ख़याल रखें म-सलन : ﴾1﴿ अपनी नेकियों में बे जा मुबा-लग़े से बचें ।

﴾2﴿ किसी फ़र्द के मुक़ाबले में अपनी फ़ौक़िय्यत (बर-तरी) ज़ाहिर करने और ख़ुद अपनी ता'रीफ़ करने से इज्तिनाब करें ।

﴾3﴿ इस मुस्बत तब्दीली में अपने ज़ाती कमाल के बजाए मददे इलाही को कार फ़रमा समझें ।

﴾4﴿ बहुत कुछ पाने और कसीर ख़िदमते दीन बजा लाने के बा वुजूद ख़ौफ़े ख़ुदा रखते हुए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से डरते हुए इन आ'माले सालिह़ा की क़बूलिय्यत की दुआ़ कीजिये और बहर सूरत आ़जिज़ी व इन्किसारी के दामन को थामे रहें ।

﴾5﴿ अपने किसी मक़ाम व मर्तबा, इस्लामी मन्सब व ज़िम्मादारी या किसी ने'मते ख़ुदा वन्दी को बयान करें तो तह़दीसे ने'मत (या'नी ने'मते ख़ुदा वन्दी का चरचा करने) की निय्यत को पेशे नज़र रखते हुए उस का ज़िक्र कीजिये ताकि रियाकारी और हुब्बे

www.dawateislami.net

जाह की तबाहकारी से हिफ़ाज़त हो सके।

दा'वते इस्लामी के म-दनी मक़्सद **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है"** को मद्दे नज़र रखते हुए अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ अपनी बहार लिख कर जम्अ़ करवाइये और दो जहां की भलाइयों का अपने आप को ह़क़दार बनाइये।

सुवाल : म-दनी बहारें बयान करते या लिखते वक़्त क्या निय्यतें होनी चाहिएं ?

जवाब : म-दनी बहार लिखते वक़्त अगर दर्जे ज़ैल निय्यतें कर ली जाएं तो ढेरों ढेर सवाब के ह़क़दार बन सकते हैं ﴾1﴿ म-दनी बहारें चूंकि नेकी की दा'वत का ज़रीआ़ हैं लिहाज़ा मैं अपनी म-दनी बहार के ज़रीए़ नेकी की दा'वत आ़म करूंगा ﴾2﴿ दूसरों की तरग़ीब व तह़रीस का सामान करूंगा ﴾3﴿ अच्छे माह़ोल (जो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की एक ने'मत है) की ब-र-कतों का परचार करूंगा ﴾4﴿ शोहरत और हुब्बे जाह (अपनी इ़ज़्ज़त बढ़ने की ख़्वाहिश) से बचते हुए नेकियों का तज़्किरा सिर्फ़ तह़दीसे ने'मत के लिये करूंगा ﴾5﴿ मुसल्मानों को गुनाहों से बचाने के लिये इन की तबाह कारियों का तज़्किरा करूंगा ﴾6﴿ म-दनी बहार के ज़रीए दा'वते इस्लामी के जुम्ला म-दनी कामों (म-सलन म-दनी चेनल, म-दनी मुज़ा-करा, दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत, सुन्नतों भरे इस्लाही बयानात वग़ैरा) की तरग़ीब का ज़रीआ़ बनूंगा ﴾7﴿ सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत, म-दनी क़ाफ़िले

www.dawateislami.net

में सफ़र और म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल का ज़ेह्न देने की कोशिश करूंगा ﴾8﴿ म-दनी बहार बयान करते हुए दूसरे मुसल्मानों की ग़ीबत से बचूंगा ﴾9﴿ फ़ुज़ूल बातों और बेकार त़वालत से गुरेज़ करूंगा ﴾10﴿ झूटे मुबा-लगे़ से इज्तिनाब करूंगा ﴾11﴿ कोई ऐसी बात ज़िक्र नहीं करूंगा जिस से दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल की बदनामी होती हो ﴾12﴿ दूसरों के ऐ़ब नहीं उछालूंगा।

सुवाल : अगर कोई इस्लामी भाई ख़ुद म-दनी बहार नहीं लिख सकता तो क्या किसी दूसरे इस्लामी भाई से बहार लिखवा सकता है ?

जवाब : ख़ुद लिखना नहीं जानता तो किसी दूसरे इस्लामी भाई से म-दनी बहार लिखवाने में कोई ह़रज नहीं।

सुवाल : क्या म-दनी बहार लिखने की तरग़ीब दिलाना भी नेकी की दा'वत है ?

जवाब : जी हां, कि इस त़रह़ म-दनी माह़ोल से वाबस्ता होने वाले इस्लामी भाई से म-दनी इन्क़िलाब का इज़्हार करवा कर अ़मल से दूर और नेकियों से मह़रूम मुसल्मानों के लिये तरग़ीब का सामान करना है जो बिला शुबा नेकी की दा'वत के ज़ुमरे में आता है।

सुवाल : म-दनी बहार लिखवाने की तरग़ीब दिलाते वक़्त क्या निय्यत होनी चाहिये ?

जवाब : म-दनी माह़ोल से वाबस्ता होने वाले नए इस्लामी

www.dawateislami.net

भाइयों को म-दनी बहार लिखने की तरग़ीब देते वक़्त येह निय्यत होनी चाहिये कि इस की म-दनी बहार सुन या पढ़ कर क्या बईद किसी इस्लामी भाई की ज़िन्दगी में म-दनी इन्क़िलाब आ जाए, गुनाहों के आ़दी ताइब हो कर सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने वाले बन जाएं। यूं मेरे लिये स-द-क़ए जारिया की सूरत बन जाए।

सुवाल : क्या बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن से वाक़िआ़त बयान करना साबित है ?

जवाब : जी हां, बा'ज़ बुज़ुर्गों ने भी बत़ौरे नसीह़त और सामाने इ़ब्रत के लिये अपनी ज़िन्दगी में रूनुमा होने वाले वाक़िआ़त को बयान फ़रमाया है और सीरत निगारों ने उन वाक़िआ़त को अपनी किताबों में लिख कर मह़फ़ूज़ किया ताकि आने वाली नस्लें इन से फ़ैज़याब हो कर मक़्सदे ह़यात जान सकें।

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़-लमाए किराम इस मस्अले के मु-तअ़ल्लिक़ कि :

हमारे म-दनी माह़ोल में बहारें लिखी और लिखवाई जाती हैं बल्कि अब रेकॉर्ड करने और म-दनी चेनल पर चलाने का भी सिल्सिला है। बसा अवक़ात बहार बयान करने वाला बिला मक़्सद ग़ीबत का मुर-तकिब हो जाता है (म-सलन : मां ज़ुल्म करती, बाप ने तरबियत न की लेकिन कभी इस का बयान इस लिये किया जाता है कि वालिद साह़िब को कुछ अ़र्से बा'द दा'वते इस्लामी का माह़ोल समझ आ गया), इसी त़रह़ ऐसे

www.dawateislami.net

गुनाहों का इज़्हार कर देता है कि जो मुआ़-शरे में घटिया जाने जाते हैं। म-सलन ज़िना, लिवात़त वग़ैरा।

दरयाफ़्त त़लब उमूर येह हैं कि : ﴾1﴿ इस त़रह़ के गुनाहों का म-दनी बहारों में इज़्हार करना कैसा ? ﴾2﴿ बहार फ़ॉर्म में नाम व नम्बर भी होता है, क्या शो'बए तह़रीर या म-दनी चेनल ज़िम्मादारान को इन की तौबा करवाना लाज़िम है ? ﴾3﴿ तह़रीर की जगह video से शख़्सिय्यत ज़ियादा वाज़ेह़ होती है, इस में क्या क्या एह़तियातें करनी चाहिएं ? (शो'बए म-दनी बहारें)

जवाब : म-दनी बहार लिखने, लिखवाने या रेकॉर्ड कराने से पहले अच्छी त़रह़ तरबियत की जाए कि उस ने किस अन्दाज़ में लिखना या बयान करना है। इसी त़रह़ फ़ॉर्म फ़िल कराते हुए भी हिदायात लिखी हुई होने के साथ साथ ज़बानी त़ौर पर बताई जाएं, जो शख़्स इस के बा वुजूद बिला वज्ह अपने गुनाहों का इज़्हार करता है उस को तौबा करने का कहा जाएगा। (दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सुवाल : म-दनी बहार किसे कहते हैं ?

जवाब : दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में लोगों का म-दनी कामों में से किसी काम से मु-तअस्सिर हो कर अपने गुनाहों को छोड़ कर नेकियों की राह पर गामज़न हो जाना "म-दनी बहार" कहलाता है। याद रखिये ! ह़क़ीक़ी म-दनी बहार वोह है जिस में बन्दा अपने तमाम गुनाहों का ए'तिराफ़ करते हुए नदामत के

www.dawateislami.net

साथ उन्हें छोड़ने, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सच्ची तौबा करने और नेकियां करने में काम्याब हो जाए । गुनाह अगर क़ाबिले तलाफ़ी हों तो सिर्फ़ तौबा काफ़ी नहीं बल्कि उन की तलाफ़ी भी की जाए म-सलन अगर कोई चोर डाकू था तो वोह तौबा के साथ साथ जिन जिन लोगों का माल चुराया, डराया धमकाया और दिल दुखाया है उन्हें माल वापस करने के साथ साथ उन से मुआ़फ़ी मांग कर उन्हें राज़ी भी करे ।

फ़ी ज़माना लोगों ने तौबा को भी बहुत आसान समझ लिया है बस हंसते हंसते अपने गालों पर बारी बारी हाथ लगा कर दिल को मना लेते हैं कि हम गुनाहों से साफ़ सुथरे हो चुके और फिर उन गुनाहों को अपने पर्दए ख़याल से ह़र्फ़े ग़लत़ की त़रह़ मिटा देते और अपनी मस्तियों में बद मस्त हो जाते हैं । यहां तक कि बा'ज़ नादान तो बड़ी दिलेरी से अपनी साबिक़ा ज़िन्दगी में हुक़ूक़ुल इबाद तलफ़ करने के वाक़िआ़त बत़ौरे कारनामा लोगों में बयान करते दिखाई देते हैं : म-सलन पूरे अ़लाक़े में मेरा रो'बो दब-दबा था, मेरी इजाज़त के बिग़ैर अ़लाक़े में परिन्दा पर नहीं मार सकता था, दौराने लड़ाई मैं ने फ़ुलां का सर फोड़ा और फ़ुलां का दांत तोड़ा वग़ैरा वग़ैरा, येह जुम्ले कहते वक़्त ज़र्रा भर नदामत नहीं होती जब कि हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن का अन्दाज़ तो येह हुवा करता था कि अगर कोई गुनाह सरज़द हो जाता तो उस से लाख तौबा करते मगर ख़ौफ़ ख़त्म नहीं होता था और न ही नदामत जाती थी, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना उ़त्बतुल ग़ुलाम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ السَّلَام एक

www.dawateislami.net

मकान के पास से गुज़रे तो कांपने लगे और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को पसीना आ गया। लोगों के दरयाफ़्त करने पर फ़रमाया : येह वोही जगह है जहां मैं ने छोटी उ़म्र में गुनाह किया था। (تنبیہ المغترین،الباب الاول من اخلاق السلف الصالح، منہا کثرۃ الخوف، ص۴۹) काश ! इन बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن के सदक़े हमें भी सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ नसीब हो जाए।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

तेरे ख़ौफ़ से तेरे डर से हमेशा मैं थरथर रहूं कांपता या इलाही
बना दे मुझे नेक नेकों का सदक़ा गुनाहों से हर दम बचा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश)

सुवाल : म-दनी बहार लिखते या लिखवाते वक़्त क्या निय्यत होनी चाहिये ? नीज़ म-दनी बहार लिखते या लिखवाते वक़्त किन किन बातों को मद्दे नज़र रखना चाहिये ?

जवाब : म-दनी बहार लिखना हो या लिखवाना या कोई सा भी नेक काम हो उस में बुन्यादी निय्यत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने और सवाबे आख़िरत कमाने की होनी चाहिये क्यूं कि बिग़ैर निय्यत किसी भी अ़-मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता। फिर निय्यतें जितनी ज़ियादा होंगी उतना ही सवाब भी ज़ियादा होगा, लिहाज़ा हर नेक और जाइज़ काम में उस के ह़स्बे ह़ाल जितनी अच्छी निय्यतें हो सकें कर लेनी चाहिएं। म-दनी बहार चूंकि गुज़श्ता गुनाहों से ताइब होने और नेकियों की शाहराह पर गामज़न होने के मु-तअ़ल्लिक़ होती है तो इस लिह़ाज़ से येह निय्यत भी कर लेनी चाहिये कि इस से लोगों को गुनाहों से तौबा

www.dawateislami.net

करने, नेकियां करने और दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता होने की तरग़ीब मिलेगी और उन की इस्लाह़ का सामान होगा।

बद क़िस्मती से आज कल म-दनी बहार सुनाने या लिखवाने से मक़्सूद अपनी वाह वाह चाहना, लोगों पर अपना रो'ब डालना और उन की तवज्जोह और हमदर्दी ह़ासिल करना होता है। म-दनी बहार लिखवाने या सुनाने में ख़ूब मुबा-लग़ा आराई से काम लिया जाता है और नदामत के बजाए अपने गुनाहों को बढ़ा चढ़ा कर पेश किया जाता है, याद रखिये ! म-दनी बहार लिखवा या सुना कर लोगों की इस्लाह़ का ज़रीआ बनना मुस्तह़ब है और गुनाहों को बयान करने में झूट से काम लेना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है, लिहाज़ा जिस इस्लामी भाई की बहार हो वोह उन्ही गुनाहों का तज़्किरा करे जिन में वोह मुलव्वस था, झूट का इरतिकाब न करे कि कहीं ऐसा न हो कि दूसरों की इस्लाह़ की ख़ातिर अपनी आख़िरत बरबाद कर बैठे। चुनान्चे,

रह़मते आ़-लमिय्यान, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : लोगों में से सब से बुरा और बदतर ठिकाना उस शख़्स का है जो दूसरे की दुन्या की ख़ातिर अपनी आख़िरत बरबाद कर दे।

(معجم کبیر،شهربن حوشب عن ابی أمامة ۸/۱۲۲،حدیث:۷۵۰۹)

म-दनी बहार लिखवाने या सुनाने से दूसरों की इस्लाह़ मक़्सूद होती है, लिहाज़ा म-दनी बहार सुनाते या लिखवाते

www.dawateislami.net

वक़्त ऐसे गुनाहों का तज़्किरा न किया जाए जिन से लोग घिन खाते हों, अगर्चे हर गुनाह बाइ़से इ़ब्रत और मा'यूब है मगर बद क़िस्मती से फ़ी ज़माना बहुत से गुनाह ऐसे हैं जिन्हें मुआ़-शरे में مَعَاذَاللّٰه मा'यूब नहीं समझा जाता : म-सलन नमाज़ न पढ़ना, फ़िल्में डिरामे देखना, दाढ़ी मुंडाना वग़ैरा, जब कि बदकारी वग़ैरा का गुनाह ऐसा है कि इस से लोग घिन खाते हैं लिहाज़ा ऐसे गुनाहों का ज़िक्र न किया जाए। म-दनी बहार लिखवाने या सुनाने से पहले अच्छी त़रह़ ग़ौर कर लिया जाए कि जिसे म-दनी बहार समझा जा रहा है वोह वाक़ेई़ म-दनी बहार है भी या नहीं ? बसा अवक़ात इस्लामी भाई जिसे अपने गुमान में म-दनी बहार समझ रहे होते हैं वोह ह़क़ीक़त में फ़ुज़ूलिय्यात का अम्बार होता है, इस सूरत में म-दनी बहार का फ़ॉर्म ज़ाएअ़ होने के साथ साथ म-दनी बहार लिखने, लिखवाने और उस की तफ़्तीश करने वाले इस्लामी भाइयों का क़ीमती वक़्त भी ज़ाएअ़ होता है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सुवाल : दा'वते इस्लामी के "शो'बए म-दनी बहार" के क़ियाम का सबब क्या है ?

जवाब : तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के म-दनी काम का जब आग़ाज़ हुवा तो मुबल्लिग़ीन की इन्फ़िरादी कोशिश से लोग हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में शिर्कत और सुन्नतों की तरबियत के लिये आ़शिक़ाने रसूल के हमराह म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र इख़्तियार

www.dawateislami.net

करने लगे । सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में शिर्कत और म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र की ब-र-कत से اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ कई बे नमाज़ी पांचों वक़्त के नमाज़ी बन गए, फ़ेशन के मस्ताने सुन्नतों के दीवाने बन गए, वालिदैन के ना फ़रमान फ़रमां बरदार और इत़ाअ़त गुज़ार बन गए, बे शुमार लोगों ने शराब नोशी, डाका ज़नी और दीगर जराइम से सच्ची तौबा की और मुआ़-शरे के बा किरदार मुसल्मान बन गए । इन लोगों की ज़िन्दगियों में म-दनी इन्क़िलाब बरपा होते देख कर और सुन कर कई और ख़ुश नसीब भी दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता होने लगे, तो यूं म-दनी बहारों के इस दीनी फ़ाएदे को पेशे नज़र रखते हुए मुसल्मानों की ख़ैर ख़्वाही के जज़्बे के तह़्त बत़ौरे दर्सो नसीह़त इन म-दनी बहारों को तह़रीरी सूरत में लाने, इन्हें शाएअ़ करने और कसीर लोगों तक पहुंचाने के अ़ज़ीम मक़्सद के तह़्त शो'बए म-दनी बहार का क़ियाम अ़मल में लाया गया ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सुवाल : गुनाहों भरी ज़िन्दगी में म-दनी इन्क़िलाब बरपा होने से पहले जो लोग चोरी और डकैती की वारिदातें किया करते थे तो क्या उन के लिये सिर्फ़ तौबा कर लेना काफ़ी है या चोरी और ग़स्ब शुदा माल भी लौटाना होगा ?

जवाब : साबिक़ा गुनाहों की तलाफ़ी के लिये सिर्फ़ तौबा कर लेना काफ़ी नहीं बल्कि तौबा के साथ साथ जिन लोगों का माल चोरी या ग़स्ब किया था उन्हें वापस भी लौटाना होगा, अगर वोह ज़िन्दा न रहे हों तो उन के वु-रसा को देना होगा, अगर वु-रसा

www.dawateislami.net

का भी पता न चले तो उतना माल बतौ़रे स-दक़ा किसी शर-ई फ़क़ीर को देना होगा जैसा कि मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : जो माल रिश्वत या तग़न्नी (या'नी गाने या अश्आ़र पढ़ कर) या चोरी से ह़ासिल किया उस पर फ़र्ज़ है कि जिस जिस से लिया उन पर वापस कर दे, (अगर) वोह (ख़ुद) न रहे हों उन के वु-रसा को दे, पता न चले तो फ़क़ीरों पर तसद्दुक़ करे, ख़रीदो फ़रोख़्त किसी काम में उस माल का लगाना ह़रामे क़त़ई है, बिग़ैर सूरते मज़्कूरा के कोई त़रीक़ा इस के वबाल से सुबुक दोशी का नहीं। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 155) चूंकि दौराने डकैती مَعَاذَاللّٰه मुसल्मानों को अस्लिह़ा दिखा कर ख़ूब डराया और धमकाया जाता है और बसा अवक़ात मुज़ा-ह़मत करने पर हाथ तक उठाया जाता है लिहाज़ा माल लौटाने के साथ साथ जिन लोगों का दिल दुखाया है उन से मुआ़फ़ी भी मांगी जाए तब ही उन गुनाहों से सुबुक दोशी मुम्किन है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सुवाल : अगर कोई चोरी या ग़स्ब शुदा माल ख़र्च कर चुका हो और अब इतने वसाइल भी न हों कि माल वापस कर सके तो इस सूरत में उसे क्या करना चाहिये ?

जवाब : अगर कोई चोरी या ग़स्ब शुदा माल अपनी ज़रूरिय्यात पर ख़र्च कर चुका और अब इतने वसाइल भी नहीं कि माल वापस कर सके तो ऐसी सूरत में उसे चाहिये कि वोह उन लोगों

www.dawateislami.net

से मुआ़फ़ी मांगे जिन का माल चोरी या ग़स्ब किया था और साथ ही इन्तिहाई आ़जिज़ी व इन्किसारी से उन से दर-ख़्वास्त करे कि फ़िलह़ाल इतने वसाइल नहीं कि मैं आप का माल वापस कर सकूं, जैसे ही अस्बाब मुयस्सर हुए तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ आप का माल वापस कर दूंगा। आप अगर मुआ़फ़ कर दें तो मुझ गुनाहगार पर एह़साने अ़ज़ीम होगा। गिड़गिड़ा कर नदामत और इख़्लास से अगर मुआ़फ़ी मांगी गई तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ साह़िबे माल का दिल चोट खा जाएगा और वोह मुआ़फ़ कर देगा। अगर वोह मुआ़फ़ करने पर राज़ी न हो तो सिद्क़े दिल से माल लौटाने की कोशिश जारी रखे, अगर इसी ह़ालत में इन्तिक़ाल हो गया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से उम्मीद है कि बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ साह़िबे माल को राज़ी कर के नजात की राह हमवार कर देगा जैसा कि ह़दीसे पाक में है :

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक बार रसूले करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे दरमियान तशरीफ़ फ़रमा थे कि आप मुस्कुराने लगे यहां तक कि आप के दन्दाने मुबारक ज़ाहिर हो गए। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान ! आप को किस चीज़ ने हंसाया ? तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : (बरोज़े क़ियामत) मेरी उम्मत के दो शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़ुज़ूर दो ज़ानू हो कर बैठे होंगे। उन में से एक अ़र्ज़ करेगा : ऐ मेरे रब ! मेरे भाई से मुझ पर

www.dawateislami.net

किये गए ज़ुल्म का बदला दिलवा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : तू अपने भाई से क्या लेना चाहता है हालां कि इस की नेकियों में से कोई नेकी बाक़ी नहीं रही। वोह अ़र्ज़ करेगा : फिर मेरे गुनाह इस पर डाल दे। उस वक़्त आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की चश्माने मुबारक से आंसू बहने लगे। फिर इर्शाद फ़रमाया : बेशक येह दिन बड़ा ज़बर दस्त होगा। लोग उस दिन इस बात के मोहताज होंगे कि उन के कुछ गुनाह उठा लिये जाएं। फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ साहिबे हक़ से इर्शाद फ़रमाएगा : अपनी आंख उठा कर देख। वोह नज़र उठा कर देखेगा तो अ़र्ज़ करेगा : ऐ मेरे रब ! मैं सोने के मैदान और सोने से बने हुए महल्लात देख रहा हूं जो मोतियों से जगमगा रहे हैं। येह किस नबी के लिये हैं ? या किस सिद्दीक़ के लिये हैं ? या किस शहीद के लिये हैं ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : येह उस शख़्स के लिये हैं जो इन की क़ीमत अदा कर दे। अ़र्ज़ करेगा : ऐ मेरे रब ! कौन इन का मालिक बन सकता है ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : तुम इन के मालिक बन सकते हो। अ़र्ज़ करेगा : किस चीज़ के इवज़ ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : अपने भाई को मुआ़फ़ करने के इवज़। अ़र्ज़ करेगा : ऐ मेरे रब ! मैं ने इसे मुआ़फ़ कर दिया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : फिर अपने भाई का हाथ पकड़ और जन्नत में दाख़िल हो जा।

(الترغیب والترھیب ،کتاب الحدود ،الترغیب فی العفو عن القاتل.....الخ، ۳/۲۱۱، حدیث:۳۷٦۸)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हम तो माइल ब करम हैं कोई साइल ही नहीं
राह दिखलाएं किसे रह-रवे मन्ज़िल ही नहीं

www.dawateislami.net

''ऐ काश ! देखूं मदीने की बहार''

के 22 हुरूफ़ की निस्बत से मजलिसे म-दनी बहारें के 22 म-दनी फूल

फ़रमाने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ **:**

❁ दा'वते इस्लामी का 99.99 % म-दनी काम इन्फ़िरादी कोशिश से मुम्किन है।

﴾1﴿ फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है **:** نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ या'नी मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (معجم کبیر،٦/١٨٥، حدیث:٥٩٤٢) इस लिये मजलिस म-दनी बहारें का हर ज़िम्मादार अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के अ़ता कर्दा ''**72 म-दनी इन्आ़मात**'' में से ''म-दनी इन्आ़म नम्बर 1'' पर अ़मल करते हुए येह निय्यत करता रहे कि **:** ''मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ुशनूदी के लिये दा'वते इस्लामी के शो'बे ''**मजलिस म-दनी बहारें**'' का म-दनी काम म-दनी मर्कज़ के त़रीक़ए कार के मुत़ाबिक़ करूंगा, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ।''

﴾2﴿ मजलिस म-दनी बहारें का काम, दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हर मुन्सलिक और ज़िम्मादार (ज़ैली ह़ल्क़ा ता शूरा, मुख़्तलिफ़ शो'बाजात और उन की ज़ैली मजालिस, जामिआ़त व मदारिस और दारुल मदीना के असातिज़ा, नाज़िमीन, त़-लबा वक़्फ़ मुबल्लिग़ीन, म-दनी अ़मला वग़ैरा) के म-दनी

www.dawateislami.net

माहोल में आने, मु-तअस्सिर और मुन्सलिक होने की म-दनी बहारें और दीगर ईमान अफ़रोज़ वाक़िआत नीज़ म-दनी कामों की ब-रकात वग़ैरा म-दनी मर्कज़ के बयान कर्दा त़रीके़ कार के मुत़ाबिक़ लिखना, लिखवाना, जम्अ़ करना और इन्हें म-दनी मर्कज़ तक पहुंचाना है। ﴾3﴿ **मजलिस म-दनी बहारें** के तमाम ज़िम्मादारान, रिश्वत, तअ़ल्लुक़ात, हुक़ूक़े मुस्लिमीन और मुदा-हनत (या'नी ना जाइज़ और गुनाह वाले काम मुला-ह़ज़ा करने के बा'द उसे रोकने पर क़ादिर होने के बा वुजूद उसे न रोकना और दीनी मुआ़-मले की मदद व नुसरत में कमज़ोरी व कम हिम्मती का मुज़ा-हरा करना या किसी भी दुन्यवी मफ़ाद की ख़ात़िर दीनी मुआ़-मले में नरमी या ख़ामोशी इख़्तियार करना (الحديقة الندية،٢ /١٥٤،تفسيرصاوى على الجلالين، پ١٢،هود، تحت الاية:١١٣،٣ /٩٣٦) के शर-ई मसाइल सीखें। इस के लिये मक-त-बतुल मदीना की कुतुबो रसाइल का मुत़ा-लआ़ मुफ़ीद है म-सलन : फ़ैज़ाने सुन्नत सफ़ह़ा 539 ता सफ़ह़ा 554 ۞ कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब सफ़ह़ा 428 ता सफ़ह़ा 449 ۞ पर्दे के बारे में सुवाल जवाब ۞ बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम, हिस्सा 16 नीज़ ۞ फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 24 सफ़ह़ा 311 ता सफ़ह़ा 331 और "दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत" से ज़रूरतन शर-ई रहनुमाई भी लेते रहें। इस शो'बे के ज़िम्मादारान को चाहिये कि म-दनी बहारों को ह़ासिल करने की तरबियत पाने के लिये madanibaharaindawateislami.net से त़रीके़ कार देखें और इस शो'बे की मुकम्मल मा'लूमात के लिये वक़्तन

www.dawateislami.net

फ़ वक़्तन इस वेबसाइट को मुला-हज़ा भी करते रहें।

﴾4﴿ हर काबीना ज़िम्मादार निगराने काबीना के मश्वरे से मुख़य्यर इस्लामी भाइयों से तरकीब बना कर फ़ी काबीना कम अज़ कम 1200 म-दनी बहारों के फ़ॉर्म मक-त-बतुल मदीना से छपवाए। काबीना सत्ह के ज़िम्मादारान हर शहर में बिल ख़ुसूस म-दनी मराकिज़ (फ़ैज़ाने मदीना) व म-दनी तरबियत गाह, मद्र-सतुल मदीना, जामिअ़तुल मदीना, हफ़्तावार इज्तिमाआ़त और ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या के बस्तों वग़ैरा पर म-दनी बहारों के फ़ॉर्म मुहय्या करें, वक़्तन फ़ वक़्तन मा'लूमात भी करते रहें ताकि कम होने की सूरत में दोबारा मुहय्या किये जा सकें और बा'द में वुसूल भी फ़रमाएं। (मजलिस म-दनी बहारों के तमाम ज़िम्मादारान, बिल ख़ुसूस म-दनी बहारों के रसाइल को फ़रोख़्त/लंगर करवाने के भी ज़िम्मादार हैं)

﴾5﴿ म-दनी बहार फ़ॉर्म वुसूल करते वक़्त देख लीजिये कि कवाइफ़ (फ़ोन नम्बर और एड्रेस वग़ैरा) ना मुकम्मल तो नहीं, अगर ना मुकम्मल हों तो हाथों हाथ मुकम्मल करवा लीजिये। अगर किसी मक़ाम पर म-दनी बहार फ़ॉर्म न हो तो सादा काग़ज़ पर म-दनी मर्कज़ के बयान कर्दा त़रीक़े कार के मुत़ाबिक़ लिखवा कर जम्अ़ करवा दीजिये।

﴾6﴿ मजलिस म-दनी बहारें के बेनर्ज़ (Panaflex) प्रिन्ट करवा कर इज्तिमाआ़त (हफ़्तावार, तरबियती इज्तिमाअ़, ग़म ख़्वारी इज्तिमाअ़, म-दनी मुज़ा-करा इज्तिमाअ़, स-ह़री इज्तिमाअ़) और म-दनी मश्वरों में शर-ई रहनुमाई के साथ/नुमायां जगह पर आवेज़ां करें। बेनर की इ़बारत इस त़रह़ होनी चाहिये :

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

मजलिस म-दनी बहारें

म-दनी बहार फ़ॉर्म यहां से ह़ासिल कीजिये और पुर कर के यहीं जम्अ़ करवा दीजिये ।

इस मक़ाम (जहां बेनर लगा हो) पर कम अज़् कम एक ज़िम्मादार का होना ज़रूरी है जो म-दनी बहार फ़ॉर्म तक़्सीम और जम्अ़ करे ।

﴾7﴿ म-दनी मश्वरों, तरबियती इज्तिमाआ़त, इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों के मुख़्तलिफ़ कोर्सिज़, म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने वाले इस्लामी भाइयों से इस फ़ॉर्म में मौजूद म-दनी फूलों के मुत़ाबिक़ म-दनी बहार फ़ॉर्म पुर करवाइये । म-दनी इन्आ़मात व म-दनी क़ाफ़िला कोर्स व म-दनी तरबियती कोर्स और म-दनी तरबियत गाह के इस्लामी भाइयों के लिये म-दनी बहारों का फ़ॉर्म पुर करवाने की मश्क़ को लाज़िमी क़रार दे कर उन की तरबियत में इसे शामिल फ़रमाएं नीज़ हाथों हाथ म-दनी बहारें लिखवाने की भी तरकीब करें । मजलिस म-दनी कोर्सिज़/निगराने काबीना की मुआ़-वनत से इस म-दनी काम को कोर्सिज़ के जद्वल और तरबियती इज्तिमाआ़त का हिस्सा बनाएं । ﴾8﴿ म-दनी तरबियत गाह/हफ़्तावार इज्तिमाअ़ के मक़ाम से जब म-दनी क़ाफ़िले रवाना हों तो तरग़ीब दिला कर म-दनी बहार फ़ॉर्म तक़्सीम किये जाएं और म-दनी क़ाफ़िलों की वापसी पर फ़ॉर्म जम्अ़ करने की भी तरकीब हो । ज़िम्मादारान म-दनी

www.dawateislami.net

क़ाफ़िलों, म-दनी मश्वरों बल्कि हर वक़्त म-दनी बहारों के फ़ॉर्म अपने पास रखें और मौक़अ़ मिलते ही म-दनी बहार के फ़वाइद बता कर म-दनी बहार लिखने के म-दनी फूल सुनाएं और म-दनी बहार लिखवाएं। ﴾9﴿ दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल में होने वाले 10 दिन और मुकम्मल माह ए'तिकाफ़ में मजलिसे इज्तिमाई ए'तिकाफ़ के मा तहूत ''मजलिसे म-दनी इन्आ़मात'' की ज़िम्मादारी है कि ए'तिकाफ़ में म-दनी बहार फ़ॉर्म तक़्सीम करे और मजलिस म-दनी बहारें की ज़िम्मादारी है कि मज़्कूरा मजलिस को म-दनी बहार फ़ॉर्म मुहय्या करे और मुसल्सल पूछगछ (Follow Up) करे। ﴾10﴿ काबीना या मुल्की सत्ह़ पर इज्तिमाआ़त में (इज्तिमाअ़ गाह में) डिवीज़न सत्ह़ पर क़ाइम म-दनी तरबियत गाह में डिवीज़न म-दनी इन्आ़मात ज़िम्मादार के साथ म-दनी बहारें ज़िम्मादार भी मौजूद रहें, काबीना सत्ह़ पर क़ाइम म-दनी क़ाफ़िला मक्तब में काबीना सत्ह़ के म-दनी इन्आ़मात के ज़िम्मादार के साथ काबीना म-दनी बहारें ज़िम्मादार भी मौजूद रहें। ﴾11﴿ ह़दीसे पाक में है تَهَادَوْا تَحَابُّوْا या'नी एक दूसरे को तोह़फ़ा दो, आपस में महब्बत बढ़ेगी। (مؤطا امام مالك، ٢/ ٤٠٧، حديث: ١٧٣١) पर अ़मल की निय्यत से ज़िम्मादारान, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه और मक-त-बतुल मदीना की दीगर मत्बूआ़ कुतुबो रसाइल व VCD'S वग़ैरा की ज़ाती त़ौर पर ह़स्बे इस्तित़ाअ़त और मुख़य्यर इस्लामी भाइयों से तरकीब बना कर

www.dawateislami.net

लंगर (मुफ़्त तक़्सीम करने) की तरकीब करते रहें और फ़रोख़्त भी करें नीज़ ख़ुशी व ग़मी (शादी, फ़ौतगी, चेहलम व उ़र्स वग़ैरा), तक्लीफ़ व आज़्माइश (बे रोज़गारी, बे औलादी व नाचाक़ी और बीमारी वग़ैरा) के मवाक़ेअ़ पर तक़्सीमे रसाइल की तरग़ीब दिलाना मुफ़ीद है। ﴾12﴿ **म-दनी क़ाफ़िला, म-दनी इन्आ़मात, मुख़्तलिफ़ कोर्सिज़ के माहाना अह्दाफ़ :** मजलिस के हर सत़्ह़ के ज़िम्मादारान अपने निगराने मुशा-वरत के मश्वरे से म-दनी क़ाफ़िलों, म-दनी इन्आ़मात, म-दनी इन्आ़मात व म-दनी क़ाफ़िला कोर्स और म-दनी तरबियती कोर्स के माहाना अह्दाफ़ तै़ करें और इस के लिये भरपूर कोशिश भी फ़रमाएं। (म-दनी बहारों के काम की नौइ़य्यत चूंकि मुख़्तलिफ़ है, लिहाज़ा निगराने मजलिसे म-दनी बहार (पाकिस्तान) अपनी मजलिस की हर सहमाही का हदफ़ बनाएं और वोह हदफ़ और उस की कारकर्दगी मु-तअ़ल्लिक़ा अराकीने शूरा को मेल करें)

﴾13﴿ **ज़िम्मादारान की तक़र्रुरी की तरकीब :**

	सत़्ह़	ज़िम्मादार		सत़्ह़	ज़िम्मादार
1	हफ़्तावार इज्तिमाअ़	हफ़्तावार इज्तिमाअ़ ज़िम्मादार मजलिस म-दनी बहारें	4	मुल्क	मजलिस म-दनी बहारें
2	काबीना	काबीना ज़िम्मादार मजलिस म-दनी बहारें	5	रुक्ने शूरा	.....
3	काबीनात	काबीनात ज़िम्मादार		.....	.....

۞ हर हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में एक ज़िम्मादार मुक़र्रर होगा ۞ काबीना सत़्ह़ पर काबीना ज़िम्मादार होगा ۞ काबीनात ज़िम्मादारान पाकिस्तान सत़्ह़ की मजलिस के रुक्न हैं, इसी

www.dawateislami.net

मजलिस में से एक म-दनी इन्आ़मात और एक म-दनी क़ाफ़िला ज़िम्मादार और एक कारकर्दगी ज़िम्मादार होंगे ۞ मुख़्तलिफ़ ममालिक में मुल्की सत्ह़ पर मजलिस होगी, जो रुक्ने शूरा के तह़्त होगी। (बैरूने मुल्क वाले ज़िम्मादारान, मु-तअ़ल्लिक़ा रुक्ने शूरा की इजाज़त के बिग़ैर ज़िम्मादार न बनाएं) ۞ याद रहे ! किसी भी सत्ह़ के अराकीन व निगरान की तक़र्रुरी के लिये मु-तअ़ल्लिक़ा सत्ह़ के निगरान की इजाज़त ज़रूरी है। (अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه हर मजलिस में म-दनी इस्लामी भाई के होने को पसन्द फ़रमाते हैं)

﴾14﴿ म-दनी मश्वरे की तारीख़ व म-दनी फूल :

	तारीख़	म-दनी मश्वरा लेने वाले	सत्ह़	शु-रका	म-दनी फूल
1	2	निगराने काबीना/काबीना ज़िम्मादार	काबीना	हर हफ़्तावार इज्तिमाअ़ के ज़िम्मादारान	इन्फ़िरादी कारकर्दगी, पेशगी जद्वल व जद्वल कारकर्दगी, ज़िम्मादारान के तक़र्रुर, तरक़्क़ी व तनज़्ज़ुली का जाएज़ा, अगले माह के अह्दाफ़ वग़ैरा
2	3	निगराने काबीनात/ काबीनात ज़िम्मादार	काबीनात	काबीना ज़िम्मादारान	//
3	5	रुक्ने शूरा/निगराने मजलिस	मुल्क	काबीनात ज़िम्मादारान	//

www.dawateislami.net

वज़ाहत : रुक्ने शूरा/निगराने मजलिस, पाकिस्तान सत्ह़ की मजलिस का हर माह म-दनी मश्वरा फ़रमाएं, एक माह ब ज़रीअ़ए इन्टरनेट और एक माह बिल मुशाफ़ा

❁ कारकर्दगी जम्अ़ करवाने की तारीख़ें :

❁ हफ़्तावार इज्तिमाअ़ ज़िम्मादार : 2 ❁ काबीना : 5 ❁ काबीनात : 6 ❁ मुल्क : 7

﴾15﴿ म-दनी मश्वरों की कसरत से बचने के लिये मुक़र्रर कर्दा सत्ह़ के इलावा किसी और सत्ह़ का म-दनी मश्वरा लेने के लिये मु-तअ़ल्लिक़ा निगरान से इजाज़त ज़रूरी है। ❁ जब बड़ी सत्ह़ के ज़िम्मादार दीगर सत्ह़ के ज़िम्मादारान का म-दनी मश्वरा कर लें तो उस माह उन का माहाना म-दनी मश्वरा नहीं होगा ❁ इसी त़रह़ जिस माह निगराने काबीना/मुशा-वरत शो'बे के ज़िम्मादारान का म-दनी मश्वरा फ़रमाएंगे, उस माह भी शो'बा ज़िम्मादारान माहाना म-दनी मश्वरा नहीं करेंगे। (शो'बे के म-दनी काम को मज़बूत़ और मुनज़्ज़म करने के लिये वक़्तन फ़ वक़्तन अपने निगराने मुशा-वरत से शो'बे के इस्लामी भाइयों का मश्वरा करवाना मुफ़ीद है।) ﴾16﴿ पाकिस्तान/बैरूने मुल्क सत्ह़ के ज़िम्मादार हर म-दनी माह की 7 तारीख़ तक कारकर्दगी पाकिस्तान इन्तिज़ामी काबीना/मजलिस बैरूने मुल्क मक्तब और मु-तअ़ल्लिक़ा रुक्ने शूरा को मेल कर दें। (याद रहे ! कारकर्दगी म-दनी मश्वरे से मश्रूत़ नहीं, अगर किसी वज्ह से म-दनी मश्वरा न हो सके तब भी मुक़र्ररा तारीख़ पर अपने निगरान को कारकर्दगी पेश कर दें)

www.dawateislami.net

﴾17﴿ हर ज़िम्मादार हर माह का पेशगी जद्वल म-दनी माह की 19 तारीख़ तक अपने निगरान (निगराने मुशा-वरत/निगराने मजलिस) से मन्ज़ूर करवाए, फिर उस के मुताबिक़ पेशगी इत्तिलाअ़ के साथ अपने जद्वल पर अ़मल करे और महीना मुकम्मल होने के बा'द 3 तारीख़ तक कारकर्दगी जद्वल अपने निगरान (निगराने मुशा-वरत/निगराने मजलिस) को पेश करे।

﴾18﴿ मु-तअ़ल्लिक़ा निगरान की मुशा-वरत से शो'बा ज़िम्मादारान मंगल के रोज़ तह़रीरी काम की तरकीब बनाएं।

﴾19﴿ मु-तअ़ल्लिक़ा निगराने मुशा-वरत से मरबूत़ रहें। उन्हें अपनी कारकर्दगी से आगाह रखें और उन से मश्वरा करते रहें। जो निगरान से जितना ज़ियादा मरबूत़ रहेगा वोह उतना ही मज़बूत़ होता जाएगा। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

﴾20﴿ मु-तअ़ल्लिक़ा रुक्ने शूरा और निगराने काबीना की इजाज़त से वक़्तन फ़ वक़्तन अपनी मजलिस के तरबियती इज्तिमाअ़ की तरकीब करते रहें ताकि पुराने इस्लामी भाइयों की याद दिहानी और नए इस्लामी भाइयों की तरबियत का सामान होता रहे।

﴾21﴿ याद रहे! कि मु-तअ़ल्लिक़ा रुक्ने शूरा/मजलिसे बैरूने मुल्क ज़रूरतन इन म-दनी फूलों में तब्दीली कर सकते हैं।

﴾22﴿ ज़िम्मादारान अपनी दुन्या और आख़िरत की बेहतरी के लिये मुन्दरिजए ज़ैल उमूर को अपनाने की कोशिश फ़रमाएं :

۞ फ़र्ज़ उ़लूम सीखने की कोशिश करते रहें। फ़र्ज़ उ़लूम

www.dawateislami.net

सीखने के लिये कुतुबे अमीरे अहले सुन्नत, बहारे शरीअ़त, फ़तावा र-ज़विय्या, एह़याउल उ़लूम वग़ैरा के मुता-लआ़ की आ़दत बनाएं। ۞ म-दनी हुल्ये ﴾दाढ़ी, जुल्फ़ें, सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ (सब्ज़ रंग गहरा या'नी डार्क न हो), कली वाला सफ़ेद कुरता सुन्नत के मुताबिक़ आधी पिंडली तक लम्बा, आस्तीनें एक बालिश्त चोड़ी, सीने पर दिल की जानिब वाली जेब में नुमायां मिस्वाक, पाजामा या शलवार टख़्नों से ऊपर (सर पर सफ़ेद चादर और पर्दे में पर्दा करने के लिये म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल करते हुए कथ्थई चादर भी साथ रहे तो मदीना मदीना)﴿ की पाबन्दी करें।

۞ अ़-मली त़ौर पर म-दनी कामों में शरीक हों, रोज़ाना कम अज़ कम 2 घन्टे म-दनी कामों में सर्फ़ कीजिये **म-सलन :** म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र और म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल के लिये रोज़ाना फ़िक्रे मदीना का ज़ेह्न देने के लिये कम अज़ कम 2 इस्लामी भाइयों पर इन्फ़िरादी कोशिश, अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत, मद्र-सतुल मदीना बालिग़ान, बा'दे फ़ज्र म-दनी ह़ल्क़ा, सदाए मदीना, चौक दर्स, पाबन्दिये वक़्त के साथ अव्वल ता आख़िर हफ़्तावार और दीगर इज्तिमाआ़त में शिर्कत वग़ैरा।

۞ अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल के साथ साथ रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हुए हर माह म-दनी इन्आ़मात का रिसाला अपने ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाएं और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये उ़म्र भर में यकमुश्त 12 माह, हर 12 माह में एक माह और 30 दिन में कम अज़ कम 3 दिन जद्वल के मुताबिक़ म-दनी क़ाफ़िले

www.dawateislami.net

में सफ़र की तरकीब बनाते रहें। ۞ बिला नाग़ा फ़िक्रे मदीना करते हुए अ़त्तार का दोस्त, मह़बूब और मन्ज़ूरे नज़र बनने की सअ़ूय जारी रखिये, इस्तिक़ामत पाने के लिये कम अज़ कम 3 दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये नीज़ ज़रूरी गुफ़्त-गू कम लफ़्ज़ों में कुछ **इशारे** में और कुछ **लिख कर** करने की कोशिश के साथ साथ **निगाहें झुका कर** रखने की तरकीब बनाइये। ۞ मर्कज़ी मजलिसे शूरा, काबीना और अपने शो'बे के म-दनी मश्वरों के मिलने वाले म-दनी फूलों का ख़ुद भी मुता-लआ़ कीजिये और मु-तअ़ल्लिक़ा तमाम ज़िम्मादारान तक बर वक़्त पहुंचाने की तरकीब बनाइये। ۞ अराकीने मजलिस, म-दनी इन्आ़म नम्बर 47 पर अ़मल करते हुए रोज़ाना कम अज़ कम 1 घन्टा 12 मिनट म-दनी चेनल देखने की तरकीब बनाएं नीज़ हफ़्तावार Live म-दनी मुज़ा-करा देखने के साथ साथ दीगर रेकोर्डेड म-दनी मुज़ा-करों और म-दनी चेनल के सिल्सिलों को एहतिमाम के साथ देखने की म-दनी इल्तिजा है। (www.dawateislami.net और www.ameer-e-ahlesunnat.net का भी Visit करने की तरग़ीब दिलाएं)

۞ दौराने म-दनी काम व मुलाक़ात अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के ज़रीए सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या र-ज़विय्या अ़त्तारिय्या में मुरीद/

www.dawateislami.net

त़ालिब बनाने की कोशिश करते रहें, मुरीद/त़ालिब हो जाएं तो मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या से मक्तूब की तरकीब और श-ज-रए क़ादिरिय्या, र-ज़विय्या, ज़ियाइय्या, अ़त्तारिय्या ह़ासिल करने और रोज़ाना पढ़ने की तरग़ीब भी दिलाएं।

۞ म-दनी काम इस्तिक़ामत के साथ करने के लिये बिल ख़ुसूस म-दनी इन्आ़म नम्बर 24 और 26 के आ़मिल बन जाएं ۞ म-दनी इन्आ़म नम्बर 24 : क्या आज आप ने मर्कज़ी मजलिसे शूरा, काबीनात, मुशा-व-रतें व दीगर तमाम मजालिस जिस के भी आप मा तह़ूत हैं, उन की (शरीअ़त के दाएरे में रह कर) इत़ाअ़त फ़रमाई ? ۞ म-दनी इन्आ़म नम्बर 26 : किसी ज़िम्मादार (या आ़म इस्लामी भाई) से बुराई सादिर हो जाए और इस्लाह़ की ज़रूरत मह़सूस हो तो तह़रीरी त़ौर पर या बराहे रास्त मिल कर (दोनों सूरतों में नरमी के साथ) समझाने की कोशिश फ़रमाई या مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बिला इजाज़ते शर-ई किसी और पर इज़्हार कर के ग़ीबत का गुनाहे कबीरा कर बैठे ? (हां ख़ुद समझाने की जुरअत न हो या नाकामी की सूरत में तन्ज़ीमी तरकीब के मुत़ाबिक़ मस्अला ह़ल करने में मुज़ा-यक़ा नहीं।)

मर्कज़ी मजलिसे शूरा (दा'वते इस्लामी)

म-दनी मक़्सद :

मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

हफ़्तावार इज्तिमाअ़ कारकर्दगी फ़ोर्म (मजलिस म-दनी बहारें)

बराए म-दनी माह व सिन : [   ] बराए ई-सवी माह व सिन : [   ]

हक़ीक़ी कारकर्दगी वोह है जिस से इस्लामी भाइयों में अ़मल का जज़्बा पैदा हो और आख़िरत की ब-र-कतें मिलें। (फ़रमाने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه)

नाम ज़िम्मादार		शह्र	
मक़ाम इज्तिमाअ़		डिवीज़न	
काबीना ज़िम्मादार मजलिस म-दनी बहारें		काबीना	

कितनी जुमा'रात हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में 41 मिनट का बस्ता लगाया ?	
म-दनी बहारों के कितने फ़ोर्म तक़्सीम हुए ?	
म-दनी बहारों के कितने फ़ोर्म जम्अ़ हुए ?	
म-दनी बहारों के कितने फ़ोर्म काबीना ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाए ?	

इन्फ़िरादी कारकर्दगी हफ़्तावार इज्तिमाअ़ ज़िम्मादार

अक्सर दिन फ़िक्रे मदीना की ?	कितने अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में शिर्कत की ? (ता'दाद)	म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र का मक़ाम		अक्सर दिन बा'दे फ़ज्र म-दनी हल्क़े में शिर्कत की ?
		गुज़श्ता माह	आयिन्दा तारीख़	

रिज़ाए रब्बुल अनाम के कामों की कारकर्दगी				रसाइल व VCD फ़रोख़्त/तक़्सीम किये ?			
अ़त्तार का दोस्त	अ़त्तार का प्यारा	अ़त्तार का मन्ज़ूरे नज़र	महबूबे अ़त्तार	रसाइल फ़रोख़्त	रसाइल तक़्सीम	VCD फ़रोख़्त	VCD तक़्सीम

अक्सर रातें जल्द सोने वाले म-दनी इन्आ़म पर अ़मल रहा ?	अक्सर दिन 1 घन्टा 12 मिनट म-दनी चेनल देखा ?	मजलिस के म-दनी मश्वरे में शिर्कत की ?

दस्त-ख़त़ हफ़्तावार इज्तिमाअ़ ज़िम्मादार मजलिस म-दनी बहारें :..........................

फ़ोर्म जम्अ़ करवाने की तारीख़ :..............................

बराए करम ! येह कारकर्दगी फ़ोर्म हर म-दनी माह की 3 तारीख़ तक काबीना ज़िम्मादार मजलिस म-दनी बहारें को जम्अ़ करवाएं।

म-दनी मक़्सद : मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

(मुझे दा'वते इस्लामी से प्यार है) **(मजलिसे कारकर्दगी फ़ोर्म और म-दनी फूल)**

www.dawateislami.net

काबीना	
निगराने काबीना	

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

माहाना काबीना कारकर्दगी फ़ोर्म (मजलिस म-दीन बहारें)

बराए म-दनी माह व सिन ______ बराए ई-सवी माह व सिन ______

हक़ीक़ी कारकर्दगी वोह है जिस से इस्लामी भाइयों में अ़मल का जज़्बा पैदा हो और आख़िरत की ब-र-कतें मिलें। (फ़रमाने अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ)

काबीना ज़िम्मादार मजलिस म-दनी बहारें
काबीनात ज़िम्मादार मजलिस म-दनी बहारें

नम्बर	डिवीज़न	ता'दाद: अलाक़ा / शहर	ता'दाद: हफ़्तावार इज्तिमाअ़	ता'दाद: बस्ता ज़िम्मा दारान	कितने बस्ते लगे ?	कबीनात ता ज़ैली हल्क़ा/हफ़्तावार इज्तिमाआत से कितने फ़ोर्म वुसूल हुए ?	मजलिसे ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या से कितने फ़ोर्म वुसूल हुए ?	मजलिसे म-दनी क़ाफ़िला से कितने फ़ोर्म वुसूल हुए ?	म-दनी तरबियत गाह से कितने फ़ोर्म वुसूल हुए ?	जामिअ़तुल मदीना से कितने फ़ोर्म वुसूल हुए ? (सर परस्तों के भी)	जामिअ़तुल मदीना (लिल बनात) से कितने फ़ोर्म वुसूल हुए ? (सर परस्तों के भी)	मजलिस शो'बए ता'लीम से कितने फ़ोर्म वुसूल हुए ?	मजलिसे कोर्सिज़ से कितने फ़ोर्म वुसूल हुए ?	दीगर शो'बाजात से कितने फ़ोर्म वुसूल हुए ?	इज्तिमाई ए'तिकाफ़ 30, 10 दिन में कितने फ़ोर्म वुसूल हुए ?	कुल म-दनी बहारों के कितने फ़ोर्म रवाना किये ?	इस माह शो'बे में: आमदन	इस माह शो'बे में: ख़र्च
1																		
2																		
3																		
4																		
5																		
6																		
7																		
8																		
9																		
10																		
11																		
12																		
13																		
14																		
मज्मूई कारकर्दगी																		

इन्फ़िरादी कारकर्दगी काबीना ज़िम्मादार मजलिस म-दनी बहारें	अक्सर दिन फ़िक्रे मदीना की ?	कितने अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में शिर्कत की ?	म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र का मक़ाम: गुज़श्ता माह	म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र का मक़ाम: आयिन्दा तारीख़	रिज़ाए रब्बुल अनाम की कारकर्दगी: अ़त्तार का दोस्त	रिज़ाए रब्बुल अनाम की कारकर्दगी: अ़त्तार का प्यारा	रिज़ाए रब्बुल अनाम की कारकर्दगी: अ़त्तार का मन्ज़ूरे नज़र	रिज़ाए रब्बुल अनाम की कारकर्दगी: महबूबे अ़त्तार	रसाइल व vcd फ़रोख़्त/तक़्सीम किये: रसाइल फ़रोख़्त	रसाइल व vcd फ़रोख़्त/तक़्सीम किये: रसाइल तक़्सीम	रसाइल व vcd फ़रोख़्त/तक़्सीम किये: VCD फ़रोख़्त	रसाइल व vcd फ़रोख़्त/तक़्सीम किये: VCD तक़्सीम	अक्सर दिन बा'दे फ़ज्र म-दनी हल्के में शिर्कत की ?	अक्सर रातें जल्द सोने वाले म-दनी इन्आम पर अ़मल रहा ?	अक्सर दिन 1 घन्टा 12 मिनट म-दनी चेनल देखा ?	म-दनी मश्वरे में शिर्कत की ?: मजलिस म-दनी बहारें	म-दनी मश्वरे में शिर्कत की ?: काबीना

बराहे करम ! येह कारकर्दगी फ़ोर्म हर म-दनी माह की 5 तारीख़ तक निगराने काबीना और काबीनात ज़िम्मादार मजलिस म-दनी बहारें को मेल कर दें। दस्त-ख़त काबीना ज़िम्मादार म-दनी बहारें :................ कारकर्दगी फ़ोर्म जम्अ़ करवाने की तारीख़ :............................

म-दनी मक़्सद : मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। ان شاء اللہ عزوجل (मुझे दा'वते इस्लामी से प्यार है)

(मजलिसे कारकर्दगी फ़ोर्म और म-दनी फूल)

www.dawateislami.net

''ऐ काश ! देखूं मदीने की बहार'' के 22 हुरूफ़ की निस्बत से इस्लामी बहनों की ''मजलिसे म-दनी बहारें'' के 22 म-दनी फूल

﴾आ़लमी मजलिसे मुशा-वरत (दा'वते इस्लामी)﴿

फ़रमाने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **:**

दा'वते इस्लामी का 99.99 % म-दनी काम इन्फ़िरादी कोशिश से मुम्किन है।

﴾1﴿ फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है **:** **نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ** या'नी मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (معجم کبیر، ۶/۱۸۵، حدیث: ۵۹۴۲) इस लिये मजलिस म-दनी बहारें की ज़िम्मादार अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़त़ा कर्दा ''**63 म-दनी इन्आ़मात**'' में से ''म-दनी इन्आ़म नम्बर 1'' पर अ़मल करते हुए येह निय्यत करती रहे कि **:** ''मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुशनूदी के लिये दा'वते इस्लामी के शो'बे ''**मजलिस म-दनी बहारें**'' का म-दनी काम म-दनी मर्कज़ के त़रीक़ए कार के मुत़ाबिक़ करूंगी, اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ।''

﴾2﴿ मजलिस म-दनी बहारें का काम, दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हर मुन्सलिक और ज़िम्मादार (ज़ैली ह़ल्क़ा ता आ़लमी मजलिसे मुशा-वरत) मुख़्तलिफ़ शो'बाजात और उन की ज़ैली मजालिस, जामिआ़त, मद्र-सतुल मदीना लिल बनात (की असातिज़ा, नाज़िमात, त़ालिबात, म-दनी अ़मला वग़ैरा) के म-दनी माह़ोल में आने, मु-तअस्सिर और

www.dawateislami.net

मुन्सलिक होने की म-दनी बहारें और दीगर ईमान अफ़्रोज़ वाक़िआत नीज़ म-दनी कामों की ब-रकात वग़ैरा म-दनी मर्कज़ के बयान कर्दा त़रीक़े कार के मुत़ाबिक़ लिखना, लिखवाना, जम्अ़ करना और इन्हें म-दनी मर्कज़ तक पहुंचाना है। ﴾3﴿ **मजलिस म-दनी बहारें** की तमाम ज़िम्मादारान, रिश्वत, तअ़ल्लुक़ात, हुक़ूक़े मुस्लिमीन और मुदा-हनत (या'नी ना जाइज़ और गुनाह वाले काम मुला-ह़ज़ा करने के बा'द उसे रोकने पर क़ादिर होने के बा वुजूद उसे न रोकना और दीनी मुआ-मले की मदद व नुसरत में कमज़ोरी व कम हिम्मती का मुज़ा-हरा करना या किसी भी दुन्यवी मफ़ाद की ख़ात़िर दीनी मुआ-मले में नरमी या ख़ामोशी इख़्तियार करना (الحديقة الندية،٢/١٥٤،تفسيرصاوى على الجلالين، پ١٢،هود، تحت الاية:١١٣،٣/٩٣٦) के शर-ई मसाइल सीखें, इस के लिये मक-त-बतुल मदीना की कुतुबो रसाइल का मुत़ा-लआ़ मुफ़ीद है म-सलन : फ़ैज़ाने सुन्नत सफ़ह़ा 539 ता सफ़ह़ा 554 ۞ कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब सफ़ह़ा 428 ता 449 ۞ पर्दे के बारे में सुवाल जवाब ۞ बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम, ह़िस्सा 16 नीज़ ۞ फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 24 सफ़ह़ा 311 ता सफ़ह़ा 331 और "दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत" से ज़रूरतन शर-ई रहनुमाई भी लेती रहें। इस के इ़लावा www.madanibaharain.dawateislami.net से त़रीक़े कार देखें और इस शो'बे की मुकम्मल मा'लूमात के लिये इस website को visit करें।

﴾4﴿ मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादार (काबीना सत़्ह़) दर्जे ज़ैल शो'बाजात म-दनी तरबियत गाह, मद्र-सतुल मदीना

www.dawateislami.net

लिल बनात, जामिअ़तुल मदीना लिल बनात, दारुल मदीना लिल बनात, कोर्सिज़ मजलिस की ज़िम्मादारान (काबीना सत्ह़), मजलिसे राबित़ा व शो'बए ता'लीम ज़िम्मादारान (काबीना सत्ह़) और ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या के बस्तों वग़ैरा से म-दनी बहार फ़ॉर्म वुसूल फ़रमाएं । (म-दनी बहारों के ज़िम्मादारान तमाम म-दनी बहार रसाइल को फ़रोख़्त/तक़्सीम करवाने की भी ज़िम्मादार हैं । (येह पेपर रेकॉर्ड फ़ाइल में मौजूद है))

﴾5﴿ म-दनी बहार फ़ॉर्म वुसूल करते वक़्त देख लीजिये कि कवाइफ़ (फ़ोन नम्बर और एड्रेस वग़ैरा) ना मुकम्मल तो नहीं, अगर ना मुकम्मल हों तो हाथों हाथ मुकम्मल करवा लीजिये । अगर किसी मक़ाम पर म-दनी बहार फ़ॉर्म न हो तो सादा काग़ज़ पर म-दनी मर्कज़ के बयान कर्दा त़रीक़े कार के मुत़ाबिक़ लिखवा कर जम्अ़ करवा दीजिये ।

﴾6﴿ मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादारान (काबीनात सत्ह़) मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादार इस्लामी बहन (काबीना सत्ह़) से हर म-दनी माह की 9 तारीख़ से क़ब्ल मुख़्तलिफ़ शो'बाजात से मिलने वाले म-दनी बहार फ़ॉर्म्ज़ चेक कर के अगर ना मुकम्मल हो तो हाथों हाथ मुकम्मल करवा कर madani.baharain@dawateislami.net पर मेल कर दें ।

﴾7﴿ मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादार (अ़लाक़ा सत्ह़) मजलिस म-दनी बहारें के बेनर्ज़ (Panaflex) प्रिन्ट करवा कर तमाम हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त, तरबियती ह़ल्क़ों में शर-ई रहनुमाई के साथ नुमायां जगह पर आवेज़ां करें । बेनर की इबारत इस त़रह़ होनी चाहिये :

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

मजलिस म-दनी बहारें

म-दनी बहार फ़ॉर्म यहां से ह़ासिल कीजिये और पुर कर के यहीं जम्अ़ करवा दीजिये ।

इस मक़ाम पर जहां बेनर लगा हो हफ़्तावार इज्तिमाअ़ के बा'द 12 मिनट का बस्ता लगाया जाए जिस पर म-दनी बहारें ज़िम्मादार (ज़ैली सत़्ह़) का होना ज़रूरी है जो म-दनी बहार फ़ॉर्म तक़्सीम और जम्अ़ करे ।

﴾8﴿ मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादार (अ़लाक़ा सत़्ह़) अ़लाक़ा मजलिसे मुशा-वरत ज़िम्मादार इस्लामी बहन के ज़रीए़ तमाम हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में हर हफ़्ते ए'लानात के ज़रीए़ येह तरकीब बनाएं कि जिन इस्लामी बहनों को हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ से कोई भी म-दनी बहार मिली हो (म-सलन दिल चोट खा गया हो, गुनाहों से तौबा वग़ैरा की तौफ़ीक़, नमाज़ों की पाबन्दी नसीब हुई हो वग़ैरा) तो बा'दे इज्तिमाअ़ ''मजलिस म-दनी बहारें'' के बेनर के पास मौजूद ज़िम्मादार को अपनी बहार जम्अ़ करवाएं ।

﴾9﴿ हर सत़्ह़ की मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादारान अपनी मा तह़्त ज़िम्मादारान को म-दनी बहार फ़ॉर्म में मौजूद म-दनी फूलों नीज़ ''म-दनी बहारें लिखने में एह़तियातें'' के मुत़ाबिक़ म-दनी बहार फ़ॉर्म पुर करवाएं । नीज़ जिन इस्लामी बहन की म-दनी बहार हो उन से ''म-दनी बहारें बयान करने की अच्छी

www.dawateislami.net

अच्छी निय्यतें'' करवा कर हाथों हाथ म-दनी बहार लिखवाने की तरकीब बनाएं या ख़ुद लिख लें। (येह दोनों पेपर्ज़ रेकॉर्ड फ़ाइल में मौजूद हैं)

﴾10﴿ हर सत्ह़ की मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादारान हर वक़्त म-दनी बहारों के फ़ॉर्म नीज़ मक-त-बतुल मदीना से जारी कर्दा म-दनी बहारों के मुख़्तलिफ़ रसाइल अपने पास रखें और मौक़अ़ मिलते ही म-दनी बहार के फ़वाइद बता कर म-दनी बहार लिखने के म-दनी फूल बता कर म-दनी बहार लिखवाएं।

﴾11﴿ ह़दीसे पाक में है تَهَادَوْا تَحَابُّوْا या'नी एक दूसरे को तोह़फ़ा दो, आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी। (مؤطا امام مالك،٢/ ٤٠٧،حديث:١٧٣١) पर अ़मल की निय्यत से ज़िम्मादारान, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه और मक-त-बतुल मदीना की दीगर मत्बूआ़ कुतुबो रसाइल व VCD'S वग़ैरा की ज़ाती त़ौर पर ह़स्बे इस्तित़ाअ़त और मुख़य्यर इस्लामी बहनों से तरकीब बना कर लंगर (मुफ़्त तक़्सीम करने) की तरकीब करती रहें और फ़रोख़्त भी करें नीज़ ख़ुशी व ग़मी (शादी, फ़ौतगी, चेहलम वग़ैरा), तक्लीफ़ व आज़्माइश (बे रोज़गारी, बे औलादी व नाचाक़ी और बीमारी वग़ैरा) के मवाक़ेअ़ पर तक़्सीमे रसाइल की तरग़ीब भी दिलाती रहें।

﴾12﴿ ज़िम्मादारान की तक़र्रुरी की तरकीब। मजलिस म-दनी बहारें के म-दनी काम के लिये ज़िम्मादारान का तक़र्रुर ज़ैली

www.dawateislami.net

ह़ल्क़ा ता आ़लमी सत्ह़ है । ۞..... म-दनी इन्आ़मात व मद्र-सतुल मदीना (बालिग़ात) ज़िम्मादार को ही ''म-दनी बहार'' का शो'बा दिया जाए ।

۞..... हर सत्ह़ की मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादार इस्लामी बहन इत़ाअ़त गुज़ार, मिलन-सार, वफ़ादार, बा किरदार, ह़िल्म व बुर्द-बार, बा अख़्लाक़, सुलझी हुई, सन्जीदा, एह़सासे ज़िम्मादारी रखने वाली, शर-ई पर्दा करने वाली, ज़ाती दोस्तियों से बचने वाली, म-दनी इन्आ़मात की आ़मिला, दा'वते इस्लामी के म-दनी उसूलों की आईना-दार, इस्त़िलाह़ाते दा'वते इस्लामी से वाक़िफ़ और सियासी मुआ़-मलात (हड़ताल, एह़तिजाज वग़ैरा) पर तब्सिरा करने से बचती हो, म-दनी मश्वरों और तरबियती ह़ल्क़े की पाबन्द अल ग़रज़ सरापा तरग़ीब हो या'नी अ़-मली त़ौर पर म-दनी कामों में शरीक हो ।

۞..... किसी भी सत्ह़ पर और किसी भी शो'बे में इस्लामी बहन का तक़र्रुर सिर्फ़ इस बिना पर न किया जाए कि इन के मह़रम/बच्चों के अब्बू इस शो'बे के ज़िम्मादार हैं बल्कि येह देखा जाए कि क्या वोह इस्लामी बहन इस म-दनी काम की अह्ल हैं ? 11 मई 2009 सि.ई. के निगराने शूरा के म-दनी मश्वरे में येह म-दनी फूल भी मौजूद है कि :

''अह्ल और हम-ज़ेह्न को म-दनी काम दिया जाए ।''

नम्बर	सत्ह़	ज़िम्मादार इस्लामी बहन
1	ज़ैली ह़ल्क़ा	मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादार इस्लामी बहन (ज़ैली सत्ह़)
2	ह़ल्क़ा	मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादार इस्लामी बहन (ह़ल्क़ा सत्ह़)
3	अ़लाक़ा	मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादार इस्लामी बहन (अ़लाक़ा सत्ह़)

www.dawateislami.net

4	डिवीज़न	मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादार इस्लामी बहन (डिवीज़न सत्ह़)
5	काबीना	मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादार इस्लामी बहन (काबीना सत्ह़)
6	काबीनात	मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादार इस्लामी बहन (काबीनात सत्ह़)
7	मुल्क	मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादार इस्लामी बहन (मुल्क सत्ह़)
8	आ़लमी	मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादार इस्लामी बहन (आ़लमी सत्ह़)

﴾13﴿ **माहाना अह्दाफ़ :** मजलिस म-दनी बहारें की हर सत्ह़ की ज़िम्मादारान अपनी मजलिसे मुशा-वरत ज़िम्मादार इस्लामी बहन के मश्वरे से ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या, म-दनी इन्आ़मात और मुख़्तलिफ़ कोर्सिज़ के माहाना अह्दाफ़ तै़ करें और इस के लिये भरपूर कोशिश भी फ़रमाएं।

۞..... म-दनी बहारों के काम की नौइय्यत चूंकि मुख़्तलिफ़ है लिहाज़ा मजलिस म-दनी बहार ज़िम्मादार इस्लामी बहन पाकिस्तान सत्ह़ अपनी मजलिस की हर सहमाही का हदफ़ बनाएं और हदफ़ और उस की कारकर्दगी मु-तअ़ल्लिक़ा रुक्ने आ़लमी मजलिसे मुशा-वरत को मेल करें।

﴾14﴿ **माहाना म-दनी मश्वरे व म-दनी फूल :**

मजलिसे म-दनी बहारें ज़िम्मादारान (ज़ैली ता आ़लमी सत्ह़) दर्जे ज़ैल तरकीब के मुत़ाबिक़ माहाना म-दनी मश्वरों की तरकीब बनाएं।

www.dawateislami.net

नम्बर	म-दनी मश्वरा लेने वाली	सत्ह़	शु-रका	म-दनी फूल
1	मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादार इस्लामी बहन (ह़ल्क़ा सत्ह़)	ह़ल्क़ा	मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादार इस्लामी बहन (ज़ैली सत्ह़)	इन्फ़िरादी कारकर्दगी, पेश्गी जद्वल व जद्वल कारकर्दगी, तरक़्क़ी व तनज़्ज़ुली का जाएज़ा, अगले माह के अह्दाफ़
2	मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादार इस्लामी बहन (अ़लाक़ा सत्ह़)	अ़लाक़ा	मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादार इस्लामी बहन (ह़ल्क़ा सत्ह़)	//
3	मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादार इस्लामी बहन (डिवीज़न सत्ह़)	डिवीज़न	मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादार इस्लामी बहन (अ़लाक़ा सत्ह़)	//

www.dawateislami.net

4	मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादार इस्लामी बहन (काबीना सत्ह़)	काबीना	मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादार इस्लामी बहन (डिवीज़न सत्ह़)	//
5	मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादार इस्लामी बहन (काबीनात सत्ह़)	काबीनात	मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादार इस्लामी बहन (काबीना सत्ह़)	//
6	मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादार इस्लामी बहन (मुल्क सत्ह़)	मुल्क	मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादार इस्लामी बहन (काबीनात सत्ह़)	//
7	मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादार इस्लामी बहन (ममालिक सत्ह़)	ममालिक	मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादार इस्लामी बहन (मुल्क सत्ह़)	//
8	मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादार इस्लामी बहन (आ़लमी सत्ह़)	आ़लमी	मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादार इस्लामी बहन (ममालिक सत्ह़)	//

www.dawateislami.net

۞.....म-दनी मश्वरों की कसरत से बचने के लिये मुक़र्रर कर्दा सत्ह़ के इलावा किसी और सत्ह़ का म-दनी मश्वरा लेने के लिये मजलिसे मुशा-वरत ज़िम्मादार इस्लामी बहन से इजाज़त ज़रूरी है।

۞..... जब बड़ी सत्ह़ की ज़िम्मादार दीगर सत्ह़ की ज़िम्मादारान का म-दनी मश्वरा कर लें तो उस माह उन का माहाना म-दनी मश्वरा नहीं होगा।

۞..... इसी त़रह़ जिस माह मु-तअ़ल्लिक़ा मजलिसे मुशा-वरत ज़िम्मादार/मुशा-वरत शो'बे के ज़िम्मादारान का म-दनी मश्वरा कर लें, उस माह भी शो'बा ज़िम्मादारान माहाना म-दनी मश्वरा नहीं करेंगी। (शो'बे के म-दनी काम को मज़बूत़ और मुनज़्ज़म करने के लिये वक़्तन फ़ वक़्तन अपनी मजलिसे मुशा-वरत से शो'बे की इस्लामी बहनों का मश्वरा करवाना मुफ़ीद है।)

۞.....याद रहे ! कारकर्दगी म-दनी मश्वरे से मश्रूत़ नहीं, अगर किसी वज्ह से म-दनी मश्वरा न हो सके तब भी मुक़र्ररा तारीख़ पर अपनी मु-तअ़ल्लिक़ा ज़िम्मादार को कारकर्दगी पेश कर दें।

۞..... मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादारान (ज़ैली ता आ़लमी सत्ह़) के "जद्वल" और "पेश्गी जद्वल" म-दनी फूल बराए म-दनी इन्आ़मात में मौजूद हैं।

﴾15﴿ कारकर्दगी जम्अ़ करवाने की तारीख़ें मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादारान अपनी कारकर्दगी म-दनी माह की इन तारीख़ों तक जम्अ़ करवाएं :

www.dawateislami.net

۞ ज़ैली ह़ल्क़ा 1 ۞ ह़ल्क़ा 2 ۞ अ़लाक़ा 3 ۞ डिवीज़न 5 ۞ काबीना 7 ۞ काबीनात 9 ۞ मुल्क 11 ۞ ममालिक 15 ۞ आ़लमी 17 ।

۞..... मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादार इस्लामी बहन काबीनात सत़्ह़ हर म-दनी माह की 9 तारीख़ को काबीनात कारकर्दगी मजलिस म-दनी बहारें (काबीनात सत़्ह़) पुर फ़रमा कर मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादार मुल्क सत़्ह़ को जम्अ़ करवाने के साथ साथ मजलिस म-दनी काम बराए इस्लामी बहनें ज़िम्मादार (काबीनात सत़्ह़) को ब ज़रीअ़ए मेल जम्अ़ करवाएं ।

۞..... मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादार इस्लामी बहन मुल्क सत़्ह़ हर म-दनी माह की 11 तारीख़ को ''मुल्क कारकर्दगी मजलिस म-दनी बहारें (मुल्क सत़्ह़)'' पुर फ़रमा कर मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादार ममालिक सत़्ह़ को जम्अ़ करवाने के साथ साथ मजलिस म-दनी काम बराए इस्लामी बहनें ज़िम्मादार (मुल्क सत़्ह़) को ब ज़रीअ़ए मेल जम्अ़ करवाएं । ۞..... मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादार इस्लामी बहन ममालिक सत़्ह़ हर म-दनी माह की 15 तारीख़ तक ''ममालिक कारकर्दगी मजलिस म-दनी बहारें (ममालिक सत़्ह़)'' पुर फ़रमा कर मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादार आ़लमी सत़्ह़ को ब ज़रीअ़ए मेल जम्अ़ करवाएं । ۞..... मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादार इस्लामी बहन आ़लमी सत़्ह़ हर म-दनी माह की 15 तारीख़ को जामिअ़तुल मदीना लिल बनात (आ़लमी सत़्ह़), मद्र-सतुल मदीना लिल बनात (आ़लमी सत़्ह़), मद्र-सतुल मदीना ऑन

www.dawateislami.net

लाइन लिल बनात ज़िम्मादार (मुल्क सत्ह़), दारुल मदीना लिल बनात ज़िम्मादार (आ़लमी सत्ह़) से इन के शो'बे की मजलिस म-दनी बहारों की कारकर्दगी वुसूल फ़रमा कर आ़लमी मजलिसे मुशा-वरत ज़िम्मादार इस्लामी बहन को ब ज़रीअ़ए मेल जम्अ़ करवाएं। (जामिअ़तुल मदीना, मद्र-सतुल मदीना, मद्र-सतुल मदीना ऑन लाइन, दारुल मदीना आ़लमी कारकर्दगी मजलिस म-दनी बहारें मु-तअ़ल्लिक़ा शो'बे की ज़िम्मादारान के पास मौजूद हैं)

۞..... मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादार इस्लामी बहन आ़लमी सत्ह़ हर म-दनी माह की 17 तारीख़ को "आ़लमी कारकर्दगी मजलिस म-दनी बहारें (आ़लमी सत्ह़)" पुर फ़रमा कर आ़लमी मजलिसे मुशा-वरत ज़िम्मादार इस्लामी बहन को जम्अ़ करवाने के साथ साथ मजलिस म-दनी काम बराए इस्लामी बहनें (रुक्ने शूरा) को ब ज़रीअ़ए मेल जम्अ़ करवाएं। (कारकर्दगी मजलिस म-दनी बहारें ज़ैली ता आ़लमी सत्ह़ रेकॉर्ड फ़ाइल में मौजूद हैं)

۞..... मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादारान (ज़ैली ता आ़लमी सत्ह़) मु-तअ़ल्लिक़ा कारकर्दगी फ़ॉर्म अपनी मा तहूत ज़िम्मादारान की कार-कर्दगियों को मद्दे नज़र रख कर पुर फ़रमाएं।

﴾16﴿ हर सत्ह़ की मजलिसे म-दनी बहारें ज़िम्मादारान मु-तअ़ल्लिक़ा शो'बा मुशा-वरत को कारकर्दगी जम्अ़ करवाने के साथ साथ अपनी मजलिसे मुशा-वरत ज़िम्मादार को भी जम्अ़ करवाएं।

﴾17﴿ मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादारान (ज़ैली ह़ल्क़ा ता आ़लमी सत्ह़) माहाना म-दनी मश्वरे में अपनी मा तहूत ज़िम्मादारान

www.dawateislami.net

की बेहतर कारकर्दगी म-सलन सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ व म-दनी मश्वरे की पाबन्दी, म-दनी बहारें जम्अ़ करवाने की ता'दाद में इज़ाफ़ा होने और हर माह कारकर्दगी मुक़र्ररा वक़्त पर जम्अ़ करवाने की सूरत में हौसला अफ़्ज़ाई करते हुए म-दनी तोह़फ़ा (कुतुबो रसाइल/VCD'S केसिट वग़ैरा) देने की तरकीब बनाएं। (याद रहे कि म-दनी अ़तिय्यात से तोह़फ़ा देने की इजाज़त नहीं)

۞..... जिस किताब/केसिट/VCD का तोह़फ़ा दिया जाए तोह़फ़ा देते वक़्त येह निय्यत भी करवाई जाए कि कितने दिन तक पढ़, सुन या देख लेंगी ?

﴾18﴿ मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादारान (ज़ैली ता आ़लमी सत्ह़) अपनी ज़िम्मादार इस्लामी बहन से मरबूत़ रहें। उन्हें अपनी कारकर्दगी से आगाह रखें और उन से मश्वरा करती रहें। जो ज़िम्मादार से जितनी ज़ियादा मरबूत़ रहेंगी वोह उतनी ही मज़बूत़ होती जाएंगी। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

﴾19﴿ अगर किसी काबीनात में मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादार मुक़र्रर न हों तो ऐसी सूरत में मजलिसे मुशा-वरत ज़िम्मादार इस्लामी बहन इस म-दनी काम की तरकीब बनाएंगी।

﴾20﴿ शो'बा "म-दनी बहारें" पर नई ज़िम्मादार इस्लामी बहन की तक़र्रुरी की बिना पर तन्ज़ीमी तरकीब के मुत़ाबिक़ म-दनी बहारें ज़िम्मादार (ज़ैली ह़ल्क़ा ता आ़लमी सत्ह़) शो'बे के म-दनी फूल समझाने की तरकीब बनाएं। ﴾21﴿ मजलिस

www.dawateislami.net

म-दनी बहारें ज़िम्मादारान (ज़ैली ता आ़लमी सत्ह़) अपनी दुन्या और आख़िरत की बेहतरी के लिये मुन्दरिजए ज़ैल उमूर को अपनाने की कोशिश फ़रमाएं : ۞..... फ़र्ज़ उ़लूम सीखने की कोशिश करती रहें । फ़र्ज़ उ़लूम सीखने के लिये कुतुबे अमीरे अहले सुन्नत, बहारे शरीअ़त, फ़तावा र-ज़विय्या, एह़याउल उ़लूम वग़ैरा के मुत़ा-लआ़ की आ़दत बनाएं । ۞..... म-दनी बुरक़अ़ की पाबन्दी करें और दीदाज़ैब बुरक़अ़ पहनने से इज्तिनाब करें । ۞..... अ़-मली त़ौर पर म-दनी कामों में शरीक हों, रोज़ाना कम अज़ कम 2 घन्टे म-दनी कामों में सर्फ़ कीजिये, पाबन्दिये वक़्त के साथ अव्वल ता आख़िर हफ़्तावार इज्तिमाअ़ और तरबियती ह़ल्क़े में शिर्कत वग़ैरा । ۞..... अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल के साथ साथ रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हुए हर माह म-दनी इन्आ़मात का रिसाला अपनी ज़िम्मादार इस्लामी बहन को जम्अ़ करवाएं और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये अपने मह़ारिम को उ़म्र भर में यकमुश्त 12 माह, हर 12 माह में एक माह और 30 दिन में कम अज़ कम 3 दिन जद्वल के मुत़ाबिक़ म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की तरग़ीब दिलाती रहें । ۞..... रिज़ाए रब्बुल अनाम के म-दनी कामों पर अ़मल करते हुए अ़त्त़ार की अजमेरी, बग़दादी, मक्की और म-दनी बेटी बनने की सअ़्य जारी रखें, नीज़ ज़रूरी गुफ़्त-गू कम लफ़्ज़ों में, कुछ **इशारे** में और कुछ **लिख कर** करने की कोशिश के साथ साथ

www.dawateislami.net

निगाहें झुका कर रखने की तरकीब बनाएं। ۞..... मर्कज़ी मजलिसे शूरा, काबीना और अपने शो'बे के म-दनी मश्वरों के मिलने वाले म-दनी फूलों का खुद भी मुता-लआ़ कीजिये और मु-तअ़ल्लिक़ा तमाम ज़िम्मादारान तक बर वक़्त पहुंचाने की तरकीब बनाइये। हफ़्तावार बराहे रास्त म-दनी मुज़ा-करा देखने के साथ साथ दीगर रेकोर्डेड म-दनी मुज़ा-करों को एहतिमाम के साथ देखने की म-दनी इल्तिजा है। www.ameere-ahlesunnat.net और www.dawateislami.net को विज़िट करें।

۞..... दौराने म-दनी काम व मुलाक़ात अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के ज़रीए सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या र-ज़विय्या अ़त्तारिय्या में मुरीद/त़ालिब बनाने की कोशिश करती रहें, मुरीद/त़ालिब हो जाएं तो मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या से मक्तूब की भी तरकीब और श-ज-रए क़ादिरिय्या, र-ज़विय्या, ज़ियाइय्या, अ़त्तारिय्या ह़ासिल करने और रोज़ाना पढ़ने की तरग़ीब भी दिलाएं।

۞..... म-दनी काम इस्तिक़ामत के साथ करने के लिये बिल ख़ुसूस म-दनी इन्आ़म नम्बर 21 और 24 की आ़मिला बन जाएं। म-दनी इन्आ़म नम्बर 21 : क्या आज आप ने मर्कज़ी मजलिसे शूरा, काबीनात, मुशा-व-रतें व दीगर तमाम मजालिस जिस की भी आप मा तह़्त हैं, उन की (शरीअ़त के दाएरे में रह

www.dawateislami.net

कर) इताअ़त फ़रमाई ? म-दनी इन्आ़म नम्बर 24 : किसी ज़िम्मादार (या आ़म इस्लामी बहन) से बुराई सादिर होने की सूरत में तह़रीरी त़ौर पर या बराहे रास्त मिल कर (दोनों सूरतों में नरमी के साथ) समझाने की कोशिश फ़रमाई या مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बिला इजाज़ते शर-ई किसी और पर इज़्हार कर के आप ग़ीबत का गुनाहे कबीरा कर बैठीं ?

﴾22﴿..... पूछगछ (Follow up) कीजिये फ़रमाने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه : ''पूछगछ म-दनी कामों की जान है।''

म-दनी कामों की तक़्सीम के तक़ाज़े

۞..... मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादारान (ज़ैली ह़ल्क़ा ता आ़लमी सत़्ह़) म-दनी फूल बराए मजलिस म-दनी बहारें में मौजूद म-दनी काम अपने पास डायरी में बत़ौरे याद दाश्त तह़रीर फ़रमा लें या नुमायां कर लें ताकि बर वक़्त म-दनी फूल पर अ़मल हो सके। ۞..... मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादारान (ह़ल्क़ा ता आ़लमी सत़्ह़) माहाना म-दनी मश्वरे में भी पूछगछ (follow up) फ़रमाएं कि इन म-दनी फूलों पर कहां तक अ़मल हुवा ?

۞..... कमज़ोरी होने पर मु-तअ़ल्लिक़ा ज़िम्मादारान की तफ़्हीम और आयिन्दा के लिये लाइह़ए अ़मल तय्यार करें।

۞..... मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादारान (ज़ैली ता आ़लमी सत़्ह़) ''म-दनी फूल बराए शो'बए ता'लीम'' मअ़ रेकॉर्ड पेपर्ज़

www.dawateislami.net

Display File में तरतीब वार रख कर मह्फ़ूज़ फ़रमा लें । ۞..... मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादारान (ज़ैली ता आ़लमी सत्ह़) अपनी मा तह्त ज़िम्मादारान के पुर शुदा ''जद्वल'' पुर शुदा ''कारकर्दगी फ़ॉर्म्ज़ Dislplay File'' में तरतीब वार रख कर मह्फ़ूज़ फ़रमा लें । ۞..... ''म-दनी फूल मजलिस म-दनी बहारें'' से मु-तअ़ल्लिक़ अगर कोई म-दनी मश्वरा हो तो तन्ज़ीमी तरकीब के मुत़ाबिक़ अपनी ज़िम्मादार इस्लामी बहन तक पहुंचाएं । ۞..... ''म-दनी फूल मजलिस म-दनी बहारें'' से मु-तअ़ल्लिक़ अगर कोई मस्अला दरपेश हो तो तन्ज़ीमी तरकीब के मुत़ाबिक़ अपनी ज़िम्मादार इस्लामी बहन तक पहुंचाएं। ۞..... मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादार इस्लामी बहन (काबीना सत्ह़) शर-ई सफ़र होने की सूरत में ब ह़ालते मजबूरी टेलीफ़ोनिक मश्वरे के ज़रीए़ भी म-दनी फूल समझा सकती हैं ۞..... अपने मुल्क के ह़ालात व नौइय्यत के मुत़ाबिक़ अपनी मुल्की काबीना के निगरान या मजलिस म-दनी काम बराए इस्लामी बहनें ज़िम्मादार (काबीना सत्ह़) और मु-तअ़ल्लिक़ा रुक्ने आ़लमी मजलिसे मुशा-वरत की इजाज़त से इन म-दनी फूलों में ह़स्बे ज़रूरत तरमीम की जा सकती है ।

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या ﴾दा'वते इस्लामी﴿

शो'बए अमीरे अहले सुन्नत

3 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1436 सि.हि.

ब मुत़ाबिक़ 1 जून 2015 सि.ई.

www.dawateislami.net

डिवीज़न :____________

काबीना :____________

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

डिवीज़न कारकर्दगी मजलिस म-दनी बहारें

म-दनी बहार ज़िम्मादार (डिवीज़न सत्ह) उम्मे/बिन्ते :____________

बराए म-दनी माह व सिन [ ] बराए ई-सवी माह व सिन [ ]

डिवीज़न मुशा-वरत के कितने फ़ोर्म मौसूल हुए ?

हक़ीक़ी कारकर्दगी वोह है जिस से इस्लामी बहनों में अमल का जज़्बा पैदा हो और आख़िरत की ब-र-कतें मिलें। (फ़रमाने अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ)

नम्बर	अलाक़े	ता'दाद: हल्क़े	ता'दाद: हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ	हफ़्तावार इज्तिमाअ के कितने फ़ोर्म वुसूल हुए ?	मद्र-सतुल मदीना (बालिग़ात) से कितने फ़ोर्म वुसूल हुए ?	मजलिस शो'बए ता'लीम से कितने फ़ोर्म वुसूल हुए ?	मजलिसे कोर्सिज़ से कितने फ़ोर्म वुसूल हुए ?	मजलिसे राबिता से कितने फ़ोर्म वुसूल हुए ?	मजलिसे म-दनी इन्आमात से कितने फ़ोर्म वुसूल हुए ?	मजलिसे ता'वीज़ाते अत्तारिय्या से कितने फ़ोर्म वुसूल हुए ?	म-दनी तरबियत गाह से कितने फ़ोर्म वुसूल हुए ?	दीगर¹ शो'बाजात से कितने फ़ोर्म वुसूल हुए ?	कुल म-दनी बहारों के कितने फ़ोर्म रवाना किये ?	कितने फ़ोर्म मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादार (काबीना सत्ह) को इस कारकर्दगी के साथ जम्अ करवाए ?
1														
2														
3														
4														
5														
6														
7														
8														
मज्मूई कारकर्दगी														

इन्फ़िरादी कारकर्दगी	अक्सर दिन फ़िक्रे मदीना की ?	कितने अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में शिर्कत की ?	रिज़ाए रब्बुल अनाम के कामों की कारकर्दगी: अजमेरी बेटी	बग़दादी बेटी	मक्की बेटी	म-दनी बेटी	रसाइल व vcd फ़रोख़्त/तक़्सीम किये: रसाइल फ़रोख़्त	रसाइल तक़्सीम	VCD फ़रोख़्त	VCD तक़्सीम	म-दनी मश्वरे में शिर्कत की ?
डिवीज़न ज़िम्मादार मजलिस म-दनी बहारें											

बराहे करम ! येह कारकर्दगी फ़ोर्म हर म-दनी माह की 5 तारीख़ तक म-दनी बहार ज़िम्मादार (काबीना सत्ह) को जम्अ करवा दें। दस्त-ख़त म-दनी बहार ज़िम्मादार इस्लामी बहन :............ कारकर्दगी फ़ोर्म जम्अ करवाने की तारीख़ :............

1 : दीगर से मुराद घर दर्स, केसिट/ **V.C.D** बयान सुन कर अमीरे अहले सुन्नत व अल मदीनतुल इल्मिय्या के कुतुबो रसाइल पढ़ कर जिन्हें ब-र-कतें मिलीं, म-दनी चेनल, म-दनी मुज़ा-करा, मजलिसे तज्हीज़ो तक्फ़ीन, इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त वग़ैरा।

मजलिसे कारकर्दगी फ़ोर्म (दा'वते इस्लामी)

www.dawateislami.net

काबीना :

काबीनात :

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

काबीना कारकर्दगी मजलिस म-दनी बहारें

म-दनी बहार ज़िम्मादार (काबीना सत्ह) उम्मे/बिन्ते) : ____________

बराए म-दनी माह व सिन [ ] बराए ई-सवी माह व सिन [ ]

काबीना मुशा-वरत के कितने फ़ोर्म मौसूल हुए ? [ ]

हक़ीक़ी कारकर्दगी वोह है जिस से इस्लामी बहनों में अमल का जज़्बा पैदा हो और आख़िरत की ब-र-कतें मिलें । (फ़रमाने अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ)

डिवीज़न	ता'दाद अलाक़ा	ता'दाद हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ	हफ़्तावार इज्तिमाअ के कितने फ़ोर्म वुसूल हुए ?	मद्र-सतुल मदीना (बालिग़ात) से कितने फ़ोर्म वुसूल हुए ?	मजलिसे ता'वीज़ाते अत्तारिया से कितने फ़ोर्म वुसूल हुए ?	म-दनी तरबियत गाह से कितने फ़ोर्म वुसूल हुए ?	मजलिस शो'बए ता'लीम से कितने फ़ोर्म वुसूल हुए ?	मजलिसे कोर्सिज़ से कितने फ़ोर्म वुसूल हुए ?	मजलिसे राबिता से कितने फ़ोर्म वुसूल हुए ?	मजलिसे म-दनी इन्आमात से कितने फ़ोर्म वुसूल हुए ?	दीगर[1] शो'बाजात से कितने फ़ोर्म वुसूल हुए ?	मजलिसे राबिता से कितने फ़ोर्म वुसूल हुए ?	कुल म-दनी बहारों के कितने फ़ोर्म रवाना किये ?	कितने फ़ोर्म मजलिस म-दनी बहारें ज़िम्मादार (काबीनात सत्ह) को इस कारकर्दगी के साथ जम्अ करवाए ?
मज्मूई कारकर्दगी														

इन्फ़िरादी कारकर्दगी काबीना ज़िम्मादार मजलिस म-दनी बहारें	अक्सर दिन फ़िक्रे मदीना की ?	कितने अलाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में शिर्कत की ?	रिज़ाए रब्बुल अनाम के कामों की कारकर्दगी अजमेरी बेटी	बग़दादी बेटी	मक्की बेटी	म-दनी बेटी	रसाइल व vcd फ़रोख़्त/तक़्सीम किये रसाइल फ़रोख़्त	रसाइल तक़्सीम	VCD फ़रोख़्त	VCD तक़्सीम

म-दनी मश्वरे में शिर्कत की ?

बराहे करम ! येह कारकर्दगी फ़ोर्म हर म-दनी माह की 7 तारीख़ तक म-दनी बहार ज़िम्मादार (काबीनात सत्ह) को मेल कर दें । दस्त-ख़त म-दनी बहार ज़िम्मादार इस्लामी बहन :................. कारकर्दगी फ़ोर्म जम्अ करवाने की तारीख़ :.........................

1 : दीगर से मुराद घर दर्स, केसिट/ V.C.D बयान सुन कर अमीरे अहले सुन्नत व अल मदीनतुल इल्मिय्या के कुतुबो रसाइल पढ़ कर जिन्हें ब-र-कतें मिलीं, म-दनी चेनल, म-दनी मुज़ा-करा, मजलिसे तज्हीज़ो तक्फ़ीन, इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त वग़ैरा ।

मजलिसे कारकर्दगी फ़ोर्म (दा'वते इस्लामी)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

ग़ौर से पढ़ कर "म-दनी बहार फ़ोर्म" पुर कर के तफ़्सील लिख दीजिये

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से आप को म-दनी माह़ोल मुयस्सर आया, इस की बदौलत नमाज़, नवाफ़िल, रोज़ा और म-दनी हुल्ये से आरास्ता हुए, दा'वते इस्लामी के किसी भी शो'बे से आप को ब-र-कत ह़ासिल हुई, बैनल अक़्वामी शोहरत याफ़्ता किताब **फ़ैज़ाने सुन्नत** या **अमीरे अहले सुन्नत** बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के कुतुबो रसाइल पढ़ कर, बयान या केसिट सुन कर या इन की मुलाक़ात की वज्ह से या VCD व **म-दनी चेनल** देख कर सुन्नतों भरे **इज्तिमाआ़त** (हफ़्तावार/सूबाई व बैनल अक़्वामी) या इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त (बड़ी ग्यारहवीं शरीफ़, इज्तिमाए मीलाद, शबे मे'राज, शबे बराअत, शबे क़द्र) या इज्तिमाई ए'तिकाफ़ (30 या 10 रोज़ा) में शिर्कत व **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल की ब-र-कत से या **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र या दा'वते इस्लामी के किसी भी **म-दनी काम** (इन्फ़िरादी कोशिश, दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत, अ़लाक़ाई दौरा, मद्र-सतुल मदीना बालिग़ान वग़ैरा) से मु-तअस्सिर हो कर म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हुए, ज़िन्दगी में **म-दनी इन्क़िलाब** बरपा हुवा, नमाज़ी बन गए, दाढ़ी, इमामा वग़ैरा सज गया, आप को या किसी अ़ज़ीज़ को ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर सिह़्ह़त मिली, परेशानी दूर हुई, या मरते वक़्त **कलिमए त़य्यिबा** नसीब हुवा या अच्छी ह़ालत

www.dawateislami.net

में रूह़ क़ब्ज़ हुई, मर्हूम को अच्छी ह़ालत में ख़्वाब में देखा, बिशारत वग़ैरा हुई या **ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या** के ज़रीए़ आफ़ात व बलिय्यात से नजात मिली या सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या र-ज़विय्या अ़त्तारिय्या या इस के श-जरे से कोई ब-र-कत ह़ासिल हुई हो तो (दूसरों की तरग़ीब की निय्यत से) येह फ़ॉर्म पुर फ़रमाएं।

नाम मअ़ वल्दिय्यत :.....उ़म्र :..... किन से मुरीद या त़ालिब हैं ?

.....ख़त़ मिलने का पता :..... फ़ोन नम्बर

(मअ़ कोड) :..... ईमेल एड्रेस :.....

इन्क़िलाबी केसिट या रिसाले का नाम :..... सुनने, पढ़ने या वाक़िआ़

रूनुमा होने की तारीख़/महीना/साल :.....कितने दिन के म-दनी क़ाफ़िले

में सफ़र किया.....मौजूदा तन्ज़ीमी ज़िम्मादारी:.....

मुन्दरिजए बाला ज़राएअ़ से ह़ासिल होने वाली ब-र-कतों से जो फ़ुलां फ़ुलां बुराइयां (म-सलन फ़ेशन परस्ती, र-मज़ान के रोज़े न रखना, नमाज़ें क़ज़ा करना, झूट व ग़ीबत वग़ैरा) छूटीं वोह (दूसरों के लिये इ़ब्रत की निय्यत से) मुब्हम अन्दाज़ में मुख़्तसरन लिखें और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़ाते मुबा-रका से ज़ाहिर होने वाली ब-रकातो करामात के ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़त, मक़ाम व तारीख़ के साथ तह़रीर फ़रमा कर इस पते : ''**मजलिसे म-दनी बहारें** मक-त-बतुल मदीना, फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद, गुजरात'' पर भिजवा कर या

www.dawateislami.net

madani.baharain@dawateislami.net पर Mail फ़रमा कर एहसान फ़रमाइये। (म-दनी इन्क़िलाब बरपा होते वक़्त की कैफ़िय्यत ज़रूर लिखिये, और इस बात का ख़ास ख़याल रखिये कि झूटी बात या झूटा मुबा-लग़ा न होने पाए कि झूट ना जाइज़ व गुनाह और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।) बन पड़ा तो आप की म-दनी बहार हम नोक पलक संवार कर दूसरों को बयान करेंगे, मुम्किन है आप की म-दनी बहार दूसरों के लिये तरग़ीब का सामान हो। दा'वते इस्लामी के म-दनी मक़्सद **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है"** को मद्दे नज़र रखते हुए अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ अपनी बहार लिख कर जम्अ़ करवाइये और दो जहां की भलाइयों का अपने आप को ह़क़दार बनाइये। आप की रहनुमाई के लिये ज़ैल में कुछ निय्यतें पेश की जा रही हैं ताकि सवाब का अ़ज़ीम ज़ख़ीरा ह़िस्से में आ सके :

म-दनी बहारों की निय्यतें

۞ म-दनी बहारें चूंकि नेकी की दा'वत का ज़रीआ़ हैं लिहाज़ा मैं अपनी म-दनी बहार के ज़रीए़ नेकी की दा'वत आ़म करूंगा ۞ अपने साबिक़ा गुनाहों (जिन से सच्ची तौबा हो चुकी हो उन) का तज़्किरा शरमिन्दगी और नदामत के साथ दूसरे मुसल्मानों की इ़ब्रत और गुनाहों से नफ़्रत और तौबा की त़रफ़ माइल करने के लिये करूंगा ۞ अपने अन्दर आने वाली तब्दीली बयान कर

www.dawateislami.net

के दूसरों की तरग़ीब व तह़रीस का सामान और अच्छे माह़ोल (जो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की एक ने'मत है) की ब-र-कतों का परचार करूंगा ۞ अपने अन्दर आने वाली तब्दीली के ज़ाइल होने के ख़ौफ़ और रब तआ़ला की ख़ुफ़्या तदबीर पर नज़र करते हुए, शोहरत और हुब्बे जाह से बचते हुए नेकियों का तज़्किरा सिर्फ़ तह़दीसे ने'मत के लिये करूंगा ۞ म-दनी बहार के ज़रीए़ दा'वते इस्लामी के जुम्ला म-दनी कामों (म-सलन म-दनी चेनल, म-दनी मुज़ा-करा, म-दनी क़ाफ़िला, दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत, सुन्नतों भरे इस्लाही़ बयानात वग़ैरा) की तरग़ीब का सामान करूंगा ۞ म-दनी बहार लिखने की एह़तियातों पर अ़मल करूंगा।

(म-दनी बहारें लिखना और लिखवाना एक अहम काम है, लिहाज़ा इस में बहुत सी बातों का लिह़ाज़ रखना निहायत ज़रूरी है वरना बे एह़तियाती की सूरत में गुनाह में पड़ने और झूट की आफ़त में फंसने का क़वी अन्देशा है लिहाज़ा चन्द एह़तियातें ज़िक्र की जाती हैं)

म-दनी बहारों की एह़तियातें

۞ अपने साबिक़ा गुनाहों को बढ़ा चढ़ा कर बयान करना (म-सलन : हफ़्ते में एकआध फ़िल्म देखने वाले का येह कहना कि जब तक मैं फ़िल्म न देखता था मुझे नींद नहीं आती थी) ۞ किसी फ़र्दे मुअ़य्यन जैसे मां बाप, भाई बहन वग़ैरा की ग़ीबत करना (म-सलन इस त़रह़ बयान न करे कि मेरा बाप मुझे मारता था, मां

www.dawateislami.net

गालियां देती थी बल्कि यूं कहे कि बा'ज़ घर वाले सख़्तियां करते थे या वालिद साहिब शुरूअ़ शुरूअ़ में तो सख़्तियां करते थे मगर जब उन को दा'वते इस्लामी का माहोल समझ आ गया तो सख़्तियां करना बन्द कर दिया) ۞ किसी पर इल्ज़ाम तराशियां करना, अपने घरेलू मसाइल बिला वज्ह बयान करना, ग़ैर ज़रूरी चीज़ों में जा पड़ना वग़ैरा से बचना ۞ ऐसे त़रीक़े या गुनाह जो किसी की तरग़ीब का सबब बन सकते हों उन्हें बयान करने से ह़त्तल मक़्दूर बचना म-सलन इस त़रह़ बयान न करें कि मैं फ़ुलां गुलूकार के गाने बहुत शौक़ से सुनता था, उस की आवाज़ में ऐसा जादू है कि मैं रो पड़ता था। इ़श्क़ की राह में इतना आगे निकल गया कि नशा शुरूअ़ कर दिया जिस से मुझे सुकून मिलता या मैं फ़ुलां शॉपिंग सेन्टर गया वहां फ़िल्मों की सीडीज़ बहुत सस्ती मिलती हैं या फ़ुलां गली के कोने पर शराब ख़ाना है उस के सामने एक्सीडेन्ट में एक शख़्स जान से हाथ धो बैठा वग़ैरा ۞ ऐसे अल्फ़ाज़ बयान करने से मुकम्मल परहेज़ कीजिये जिन्हें फ़ेमिली में इस्ति'माल नहीं किया जा सकता म-सलन ज़िना, लिवात़त वग़ैरा, बल्कि इन की जगह गन्दे कामों में मुब्तला था, अख़्लाक़ी बुराइयों में मुलव्वस था वग़ैरा अल्फ़ाज़ इस्ति'माल किये जाएं ۞ अपनी नेकियों में बे जा मुबा-लग़ा या किसी फ़र्द के मुक़ाबले में अपनी फ़ौक़िय्यत ज़ाहिर करने या ख़ुद अपनी ता'रीफ़ बिला किसी सह़ीह़ निय्यत के करने से

www.dawateislami.net

बचना ज़रूरी है बल्कि अपनी मुस्बत तब्दीली को ज़ाती कमाल समझने के बजाए मददे इलाही को कार-फ़रमा समझिये नीज़ बहुत कुछ पाने और कसीर ख़िदमते दीन बजा लाने के बा वुजूद ख़ौफ़े ख़ुदा रखते हुए, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से डरते हुए इन आ'माले सालिहा की क़बूलिय्यत की दुआ कीजिये और बहर सूरत आ़जिज़ी व इन्किसारी का दामन थामे रहिये। और जो मक़ाम व मर्तबा और इस्लामी मन्सब व ज़िम्मादारी या किसी ने'मते ख़ुदा वन्दी को बयान करें तो तह्दीसे ने'मत की निय्यत पेशे नज़र रखते हुए उस का ज़िक्र कीजिये ताकि रियाकारी और हुब्बे जाह की तबाह कारी से हिफ़ाज़त हो सके।

तफ़्सीलन तह़रीर फ़रमा दीजिये

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

म-दनी चेनल देखते रहिये

मजलिस म-दनी बहारें

(दा'वते इस्लामी)

म-दनी बहार के फ़ॉर्म यहां से ह़ासिल कीजिये और पुर कर के यहीं जम्अ़ करवा दीजिये ।

काबीना :

www.dawateislami.net

आप भी म-दनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये

येह हक़ीक़त है कि सोहबत असर रखती है, इन्सान अपने दोस्त की आदात व अख़्लाक़ और अक़ाइद से ज़रूर मु-तअस्सिर होता है। हदीसे पाक में नेक आदमी की मिसाल मुश्क वाले की तरह बयान की गई है कि अगर उस से कुछ न भी मिले तो उस की हम-नशीनी खुश्बू में महक्ने का सबब बनती है जब कि बुरा आदमी भट्टी वाले की तरह है कि अगर भट्टी की सियाही न भी पहुंचे फिर भी उस का धुवां तो पहुंचता ही है। गुनाहों की आग में जलते, गुमराहियत के बादलों में घिरे इस मुआ-शरे में सुन्नतों की खुश्बूएं फैलाता दा'वते इस्लामी का म-दनी माहोल किसी ने'मत से कम नहीं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ म-दनी माहोल में तरबियत पा कर सुन्नतें अपनाने वाला इस तरह ज़िन्दगी बसर करने लगता है कि न सिर्फ़ हर आंख का तारा बन जाता है बल्कि अपने सुन्नतों भरे किरदार से कई लोगों की इस्लाह का सबब भी बन जाता है। फिर ज़िन्दगी की मीआद पा कर इस शानो शौकत से दारे आख़िरत रवाना होता है कि देखने सुनने वाले रश्क करने और ऐसी ही मौत की आरज़ू करने लगते हैं। आप भी तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये। दा'वते इस्लामी के **हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ** में शिर्कत, राहे खुदा के **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र और शैखे़ तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अता कर्दा **म-दनी इन्आमात** पर अमल को अपना मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दोनों जहां की सआदतें नसीब होंगी।

www.dawateislami.net

ग़ौर से पढ़ कर येह फ़ॉर्म पुर कर के तफ़्सील लिख दीजिये

जो इस्लामी भाई **फ़ैज़ाने सुन्नत** या **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के दीगर **कुतुब व रसाइल** सुन या पढ़ कर, बयान की **केसिट** सुन कर या हफ़्तावार, सूबाई व बैनल अक़्वामी **इज्तिमाआ़त** में शिर्कत या **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र या **दा'वते इस्लामी** के किसी भी म-दनी काम में शुमूलिय्यत की ब-र-कत से म-दनी माहोल से वाबस्ता हुए, ज़िन्दगी में **म-दनी इन्क़िलाब** बरपा हुवा, नमाज़ी बन गए, दाढ़ी, इ़मामा वग़ैरा सज गया, आप को या किसी अ़ज़ीज़ को हैरत अंगेज़ तौ़र पर **सिह़्ह़त** मिली, परेशानी दूर हुई, या मरते वक़्त **कलिमए त़य्यिबा** नसीब हुवा या अच्छी ह़ालत में **रूह़ कब्ज़** हुई, मर्ह़ूम को अच्छी ह़ालत में ख़्वाब में देखा, बिशारत वग़ैरा हुई या **ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या** के ज़रीए आफ़ात व बलिय्यात से नजात मिली हो तो हाथों हाथ इस फ़ॉर्म को पुर कर दीजिये और एक सफ़ह़े पर वाक़िए़ की तफ़्सील लिख कर इस पते पर भिजवा कर एह़सान फ़रमाइये "**मजलिसे म-दनी बहारें** मक-त-बतुल मदीना, फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद, गुजरात।"

नाम मअ़ वल्दिय्यत :..... उ़म्र..... किन से मुरीद या त़ालिब हैं.....ख़त़ मिलने का पता.....

.....फ़ोन नम्बर (मअ़ कोड) :..... ई मेल एड्रेस :..

..... इन्क़िलाबी केसिट या रिसाले का नाम :

www.dawateislami.net

..... सुनने, पढ़ने या वाक़िआ़ रूनुमा होने की तारीख़/महीना/साल :..... कितने दिन के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र किया :..... मौजूदा तन्ज़ीमी ज़िम्मादारी :.....

मुन-द-रजए बाला ज़राएअ़ से जो ब-र-कतें ह़ासिल हुईं, फुलां फुलां बुराई छूटी वोह तफ़्सीलन और पहले के अ़मल की कैफ़िय्यत (अगर इ़ब्रत के लिये लिखना चाहें) म-सलन फ़ेशन परस्ती, डकैती वग़ैरा और **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़ाते मुबा-रका से ज़ाहिर होने वाली **ब-रकात व करामात** के **''ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़त''** मक़ाम व तारीख़ के साथ एक सफ़ह़े पर **तफ़्सीलन तह़रीर फ़रमा दीजिये ।**

म-दनी मश्वरा

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه दौरे ह़ाज़िर की वोह यगानए रोज़गार हस्ती हैं कि जिन से श-रफ़े बैअ़त की ब-र-कत से लाखों मुसल्मान गुनाहों भरी ज़िन्दगी से ताइब हो कर **अल्लाहु रह़मान** عَزَّوَجَلَّ के अह़काम और उस के **प्यारे ह़बीबे** लबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों के मुत़ाबिक़ पुर सुकून ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं । ख़ैर ख़्वाहिये मुस्लिम के मुक़द्दस जज़्बे के तह़्त हमारा **म-दनी मश्वरा** है कि अगर आप अभी तक किसी जामेए़ शराइत़ पीर साह़िब से बैअ़त नहीं हुए तो शैख़े त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के फ़ुयूज़ो ब-रकात से **मुस्तफ़ीद** होने के लिये इन से **बैअ़त** हो जाइये । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

दुन्या व आख़िरत में काम्याबी व सुर्ख़-रूई नसीब होगी।

मुरीद बनने का त़रीक़ा

अगर आप मुरीद बनना चाहते हैं, तो अपना और जिन को **मुरीद या त़ालिब** बनवाना चाहते हैं उन का नाम नीचे तरतीब वार मअ़ वल्दिय्यत व उ़म्र लिख कर "**मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या फ़ैज़ाने मदीना, टनटन पुरा स्ट्रीट खडक मुम्बई**-9" के पते पर रवाना फ़रमा दें, तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हें भी सिल्सिलए **क़ादिरिय्या र-ज़विय्या अ़त्तारिय्या** में दाख़िल कर लिया जाएगा। (पता अंग्रेज़ी के केपीटल हुरूफ़ में लिखें)

E.Mail : attar@dawateislami.net

(1) नाम व पता बॉलपेन से और बिल्कुल साफ़ लिखें, ग़ैर मश्हूर नाम या अल्फ़ाज़ पर लाज़िमन ए'राब लगाएं। अगर तमाम नामों के लिये एक ही पता काफ़ी हो तो दूसरा पता लिखने की ह़ाजत नहीं। (2) एड्रेस में मह़रम या सर परस्त का नाम ज़रूर लिखें (3) अलग अलग मक्तूबात मंगवाने के लिये जवाबी लिफ़ाफ़े साथ ज़रूर इरसाल फ़रमाएं।

नम्बर शुमार	नाम	मर्द/औ़रत	बिन/बिन्त	बाप का नाम	उ़म्र	मुकम्मल एड्रेस

म-दनी मश्वरा : इस फ़ॉर्म को मह़फ़ूज़ कर लें और इस की मज़ीद कॉपियां करवा लें।

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमा'रात बा'द नमाज़े इ़शा आप के यहां होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये **म-दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना "**फ़िक्रे मदीना**" के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ में अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा म-दनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ " अपनी इस्लाह़ के लिये "**म-दनी इन्आ़मात**" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "**म-दनी क़ाफ़िलों**" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मुम्बई : 19, 20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429
देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560
नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621
अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाह़े दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385
हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786
हुब्ली : A.J. मुढोल कोम्पलेक्स, A.J. मुढोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक. फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी
फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net